

# कालसर्प दोष निवारक कल्याण मंदिर विधान एवं पूजा



मध्य - ॐ  
प्रथम-8  
द्वितीय-16  
तृतीय-20

रचयिता  
प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

- कृति - कालसर्प दोष निवारक कल्याण मंदिर विधान एवं पूजा
- कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति  
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
- संस्करण - प्रथम-2012 • प्रतियाँ :1000
- संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
- सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज  
ब्र. सुखनन्दनजी भैया
- संपादन - ब्र. ज्योति दीदी आस्था दीदी, सपना दीदी
- संयोजन - किरण दीदी, आरती दीदी 9660996425 9829127533
- प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,  
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट  
मनिहारों का रास्ता, जयपुर  
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008
2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार  
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566
3. विशद साहित्य केन्द्र  
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी  
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09416882301
4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली
- मूल्य - 51/- रु. मात्र (आगामी प्रकाशन हेतु)

-: अर्थ सौजन्य :-

श्री सुरेशकुमारजी जैन तत्पुत्र श्री मुकुलकुमारजी जैन  
पंजाबी पुरा, मेरठ (उ.प्र.) मो. 9837651761

## कालसर्प योग निवारक विधान

संसार दुःखों का समूह हैं। दुःखों से बचने के लिए प्राणी हमेशा प्रयत्नशील रहता है। यह प्रयत्न कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल होते हैं। अनुकूल अर्थात् सम्यक् प्रयत्न ही दुःख दूर करने में समर्थ होते हैं। दुःखों का अन्तरंग कारण हमारी रागद्वेष रूप परिणति है एवं बाह्य कारण कर्मोदय है। कर्मोदय के अनुसार अनुकूल, प्रतिकूल निमित्त मिलते रहते हैं और जीव दुःख का वेदन करता रहता है। आचार्यों ने दुःखों से बचने के लिए राग-द्वेष के परिणामों से बचने को श्रेष्ठ उपाय कहा है। अतः हम श्रावकों को जिनेन्द्र भगवान की भक्ति करनी चाहिए।

ग्रहों की स्थिति की एक दशा विशेष को काल सर्पयोग कहते हैं जो व्यक्ति को व्यथित करता रहता है। ग्रहों के स्थान (भाव) राशि का संयोग एवं ग्रहों की युति एक ऐसा योग बनाते हैं, जो ग्रहों की शक्ति को बढ़ा देते हैं। इनमें अशुभ ग्रहों के योग से वह शक्ति नकारात्मक हो जाने के कारण व्यक्ति पर विपरीत प्रभाव डालती है। जिससे वह दुःख अनुभव करता है। इस दुःख से जिनेन्द्र भगवान की भक्ति ही बचा सकती है; क्योंकि भक्ति से अंतरंग के परिणाम सकारात्मक बनते हैं और बाह्य में शान्ति का अनुकूल वातावरण बनता है। इस कार्य के लिये पूज्य आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा प्रणीत कालसर्प दोष निवारक श्री पार्श्वनाथ की आराधना का यह पूजा विधान अत्यन्त उपयोगी है। ग्रहों की प्रतिकूलता के उपशमन के लिए यह विधान कालसर्पयोग वाले व्यक्ति को अपने जन्म नक्षत्र में ही करना चाहिए। क्योंकि जन्म नक्षत्र की शक्ति के साथ हमारी भक्ति की शक्ति अनुकूल सकारात्मक शक्ति का निर्माण कर, विपरीत, प्रतिकूल, नकारात्मकता का समापन होता है।

अतः यह विधान पूर्णभक्ति एवं विधिपूर्वक मांडना बनाकर कलश एवं दीपक स्थापित करके अभिषेक एवं शान्तिधारा करके ही प्रारम्भ करना चाहिए। विधान से संबंधित जाप का अनुष्ठान अवश्य करें। पूजा भक्ति का प्रसाद शिव प्रासाद की आधारशिला होता है।

अतः काल सर्प योग जैसे सामान्य दोष को दूर करने में कोई बाधा ही नहीं है। यह विधान आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पावन भावना से प्रस्तुत हुआ है। अतः इसके करने से विधानकर्ता के भावों में भी विशुद्धता आती है। जो कि दुःख दूर करने का प्रबल हेतु है।

— पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन, रजवांस, जिला-सागर (म.प्र.)

## उपसर्गहर स्तोत्र

(आचार्य भद्रबाहु स्वामी रचित)

उवसगहरं पासं, पासं वन्दामि कम्मघणमुक्कं ।  
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं ॥1॥  
विसहर-फुल्लिग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।  
तस्स गह-रोय-मारी, दुडुजरा जंति उवसामं ॥2॥  
चिड्डु दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।  
नर तिरिएसु वि जीवा, पावन्ति न दुक्ख-दोगच्चं ॥3॥  
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्पपाय बब्भहिए ।  
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥4॥  
इह सन्थुअदो महायश ! भत्तिब्भर-णिब्भरेण हिदयेण ।  
ता देव ! दिज्ज वोहिं, भवे-भवे पास ! जिणचन्दं ॥5॥  
ॐ अमरतरु कामधेणु चिन्तामणि कामकुंभमादिया ।  
सिरि पासणाह सेवागहणे सव्वे वि दासत्तं ॥6॥  
उवसगहरं त्थोत्तं, कादूणं जेण संघकल्लाणं ।  
करुणायरेण विहिदं, स भद्रबाहु गुरुं जयदु ॥7॥

इस स्तोत्र का मूल बीज मंत्र :—‘नमिऊण पास विसहर वसह जिण फुल्लिगः ।’

यदि कोई भीषण संकट आ जावे तो पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठकर, सर्वप्रथम “श्री भद्रबाहु स्वामी प्रसादात् एष योगः फलतु ।” ऐसा सात बार कहें, फिर बीज मंत्र की एक माला फेरे और बाद में उपसर्गहर स्तोत्र 27 बार पढ़ें। इस प्रकार 27 दिवस निरन्तर साधना करने से सब संकट दूर हो जाते हैं।

**नोट**— पाँच बादाम या एक श्रीफल लेकर प्रतिदिन लगातार 41 दिन स्तोत्र पढ़कर भी श्रीफल को सिर के ऊपर सात बार उल्टी दिशा में वार कर जल में प्रवाहित करें।

## क्या होता है कालसर्प योग व उसका असर

**जानकारी :** जब कभी राहु-केतु के बीच में सारे ग्रह आ जावें एवं लगातार पाँच भाव खाली रह जायें तो काल सर्पयोग बन जाता है। यह काल सर्प योग 12 प्रकार का होता है। दुःखकारक योग है।

**1. अनन्त कालसर्प योग-** लग्न में व सातवें राहु हों तो यह योग है इसमें जन्मा बालक गृहस्थ सुख, शरीर सुख नहीं भोग सकता।

**2. कुलिक कालसर्प योग-** दूसरे व आठवें घर में राहु-केतु हों तो यह योग है। कुलिक योग में जन्मा बालक धनहीन, आयु कम, शरीर निर्बल होता है।

**3. वासुकी कालसर्प योग-** तीसरे व नवमें भाव में राहु-केतु होने से बनता है। पिता व भाई-बन्धुओं से निराशा मुकद्दमे/केस लड़ने पड़ते हैं।

**4. शंखपाल कालसर्प योग-** चौथे व दसवें घर में राहु केतु होने से बनता है। वाहन हानि, धन हानि, विदेश यात्रा में रुकावट, मन दुःखी रहता है।

**5. पदम कालसर्प योग-** पाँचवें व ग्यारहवें घर में राहु-केतु होने से बनता है। पढ़ाई में रुकावट, सन्तान से दुःखी, खर्च ज्यादा लाभ कम होता है।

**6. नाभ कालसर्प योग-** छठे व बारहवें भाव में राहु-केतु होने से बनता है। प्रेम-प्यार में रुकावट, धर्म की हानि, कलंकित, चरित्र का पतन होता है।

**7. तक्षक कालसर्प योग-** सातवें से लग्न तक सारे ग्रह होने से बनता है। स्वयं का वैवाहिक जीवन बिगड़ जाता है। वनवास भोगना पड़ता है।

**8. कर्कोटक सर्प योग-** आठवें से दूसरे तक सारे ग्रह होने से बनता है। शरीर में बीमारी, सूकी पीड़ा, पैसे की कमी, कर्जा बढ़ता जाता है।

**9. शंखनाद सर्प योग-** नौवें से तीसरे भाव तक सारे ग्रह होने से बनता है। दरिद्री जीवन, जगह-जगह अपमान, पद त्याग करना पड़ता है।

**10. पातक कालसर्प योग-** दसवें से चौथे घर तक सारे ग्रह आने से बनता है। धर्म त्याग कर पैसा कमाता है। कलंकित जीवन भोगना पड़ता है।

**11. विषाक्त कालसर्प योग-** ग्यारहवें से पाँचवें भाव तक सारे ग्रह आने से बनता है।

**12. शेषनाग कालसर्प योग-** बारहवें भाव से छठे तक सारे ग्रह आ जाने से पति-पत्नि में तनाव, घर से निकल जाना और सरकार से दंडित होना पड़ता है।

## कालसर्प योग काटने के उपाय

कालसर्प योग निवारण के लिए भारत में अनेकों तरह के उपाय लिखे मिलते हैं। किन्तु उन सब में सत्यता कम ही मिलती है। ज्यादातर टोटके ही हैं। जैसे कोई कहता है लोहे का सर्प शिव पर चढ़ाना है या ताँबे का सर्प चढ़ाना, सोने-चाँदी के सर्प चढ़ाना या ब्राह्मण को दान करना बताते हैं। कोई नदी में सर्प-सर्पिणी बहाना बताते हैं एवं कोई राहु-केतु का जप या शिव मंत्र जप, कोई महामृत्युंजय जप करना बताते हैं। आदि-आदि सारे धर्म ग्रंथों की खोजबीन करने के बाद हमने जो निर्णय लिया है, वह बताते हैं।

जिस व्यक्ति पर कालसर्प योग है जब तक वह विधान नहीं कराता, तब तक उसे कल्याण मन्दिर स्तोत्र का पाठ संस्कृत में करते रहना चाहिए। यह पाठ कम से कम छः महीने तक करें और जब विधान करा लें तब उसे कुछ और उपाय करने की जरूरत नहीं है और विधान से पहले प्रत्येक रविवार को एक नारियल पार्श्वनाथ के सामने साल भर तक अवश्य चढ़ायें। विधान के बाद कोई और चीज चढ़ाने की आवश्यकता नहीं है।

—मुनि विशालसागर

## कल्याण मंदिर व्रत विधि

कल्याण मंदिर स्तोत्र भगवान पार्श्वनाथ का स्तोत्र है। इसमें भी आदि में 'कल्याणमंदिरमुदारमवद्य...' 'कल्याण मंदिर' पद आ जाने से इसका कल्याणमंदिर स्तोत्र यह सार्थक नाम हो गया है। इसमें 44 काव्य हैं अतः 44 व्रत किये जाते हैं। व्रत के दिन श्री पार्श्वनाथ का अभिषेक करके कल्याण मंदिर यंत्र का भी अभिषेक करें और कल्याण मंदिर की पूजा या श्री पार्श्वनाथ की पूजा करें। इसकी समुच्चय जाप्य निम्न प्रकार है—

**ॐ ह्रीं कमठोपसर्गजिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।**

प्रत्येक 44 मंत्र (एक-एक व्रत के दिन क्रम से 1-1 मंत्र की माला फेरें।)

1. ॐ ह्रीं भवसमुद्रतरणे पोतायमान कल्याणमंदिरस्वरूपाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
2. ॐ ह्रीं कमठस्य धूमकेतूपमाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
3. ॐ ह्रीं त्रैलोक्याधीशाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
4. ॐ ह्रीं सर्वपीडानिवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
5. ॐ ह्रीं सुखविधायकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अव्यक्तगुणाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
7. ॐ ह्रीं भवाटवीनिवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
8. ॐ ह्रीं कर्माहिबन्धमोचनाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
9. ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवहरणाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
10. ॐ ह्रीं भवोदधितारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
11. ॐ ह्रीं हुतभुग्भयनिवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।

12. ॐ ह्रीं हृदयधार्यमाणभव्यगणतारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
13. ॐ ह्रीं कर्मचौरविध्वंशकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
14. ॐ ह्रीं हृदयाम्बुजान्वेषिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
15. ॐ ह्रीं जन्ममरणरोगहराय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
16. ॐ ह्रीं विग्रहनिवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
17. ॐ ह्रीं आत्मस्वरूपध्येयाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
18. ॐ ह्रीं परवादिदेवस्वरूपध्येयाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
19. ॐ ह्रीं अशोकप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
20. ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
21. ॐ ह्रीं अजरामरदिव्यध्वनिप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
22. ॐ ह्रीं चामरप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
23. ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
24. ॐ ह्रीं भामण्डलप्रातिहार्यप्रभास्वते श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
25. ॐ ह्रीं दुन्दुभिप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
26. ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्यविराजिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
27. ॐ ह्रीं शालत्रय वप्रत्रयविराजिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
28. ॐ ह्रीं पुष्पमालानिषेवितचरणाम्बुजाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
29. ॐ ह्रीं श्री संसारसागरतारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
30. ॐ ह्रीं अद्भुतगुणविराजितरूपाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
31. ॐ ह्रीं रजोवृष्ट्यक्षोभ्याय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
32. ॐ ह्रीं कमठदैत्यमुक्तवारिधाराक्षोभ्याय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
33. ॐ ह्रीं कमठदैत्यप्रेषितभूतपिशाचाद्यक्षोभ्याय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
34. ॐ ह्रीं त्रिकालपूजनीयाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
35. ॐ ह्रीं आपन्निवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
36. ॐ ह्रीं सर्वपराभवहरणाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
37. ॐ ह्रीं सर्वमनर्थमथनाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
38. ॐ ह्रीं सर्वदुःखहराय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
39. ॐ ह्रीं जगज्जीवदयालवे श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
40. ॐ ह्रीं सर्वशांतिकराय श्रीजिनचरणाम्बुजाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
41. ॐ ह्रीं जगन्नायकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
42. ॐ ह्रीं अशरणशरणाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
43. ॐ ह्रीं चित्तसमाधि सुसेविताय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
44. ॐ ह्रीं परमशांतिविधायकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः ।

## मंगलाष्टक

—आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी ।  
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी ॥  
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधु रत्नत्रय धारी ।  
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी ॥1॥

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान् ।  
प्रवचन सागर की वृद्धि को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान ॥  
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी ।  
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी ॥2॥

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी ।  
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी ॥  
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी ।  
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी ॥3॥

तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादि चौबिस जिनदेव ।  
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव ॥  
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी ।  
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी ॥4॥

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव ।  
श्रीयुत तीर्थंकर के माता-पिता यक्ष-यक्षी भी एव ॥  
देवों के स्वामी बतिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी ।  
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी ॥5॥

सुतप वृद्धि करके सर्वोषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार ।  
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार ॥  
पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, सप्त बुद्धि ऋद्धीधारी ।  
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी ॥6॥

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी ।  
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी ॥  
बीस जिनेश सम्मेशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी ।  
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी ॥7॥

व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार ।  
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार ॥  
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी ।  
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी ॥8॥

तीर्थकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में ।  
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में ॥  
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी ।  
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी ॥9॥

धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा ।  
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा ॥  
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी ।  
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी ॥10॥

॥ इति मंगलाष्टकम् ॥

## जिनेन्द्र-स्नपन-विधि (अभिषेक पाठ)

(हाथ में जल लेकर शुद्धि करें)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानऽपि वारिभिः ।

समाहितौ यथाम्नाय करोमि सकली क्रियाम् ॥

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जिनेन्द्रदेव के चरणों में पुष्पांजलि क्षेपण करना ।)

श्रीमज् जिनेन्द्र- मभि- वन्द्य जगत् त्र्येशं,  
स्याद्वाद- नायक- मनन्त- चतुष्टयार्हम् ।  
श्री- मूलसंघ- सुदृशां सुकृतैक- हेतुर,  
जैनेन्द्र- यज्ञ- विधि- रेष मयाभ्य- धायि ॥1॥

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(निम्न श्लोक पढ़कर यज्ञोपवीत, माला, मुंदरी, कंगन और मुकुट धारण करना ।)

श्रीमन्मन्दर-सुन्दरे शुचि- जलै- धौतैः सदर्भाक्षतैः,  
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत् पाद- पद्म- स्रजः ।  
इन्द्रोऽहं निज- भूषणार्थक- मिदं यज्ञोपवीतं दधे,  
मुद्रा-कङ्कण-शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥2॥

ॐ ह्रीं ..... देवाभिषेकोत्सवे/जन्माभिषेकोत्सवे ।

श्वेत वर्णं सर्वोपद्रव हारिणि सर्वजन मनोरंजिणि परिधानोत्तरीयं धारिणि हं हं झं झं  
सं सं तं तं पं पं अहम् इन्द्रोचित परिधानोत्तरीयं आभूषणानि च धारियामि ।

ॐ नमो परम शान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय- स्वरूपं यज्ञोपवीतं  
दधामि । मम गात्रं पवित्रं भवतु अहं नमः स्वाहा । (स्वयं पर पुष्प क्षेपण करें ।)

(अग्रलिखित श्लोक पढ़कर अनामिका अंगुली से नौ स्थानों (मस्तक, ललाट, कर्ण, कण्ठ,  
हृदय, नाभि, भुजा, कलाई और पीठ) पर तिलक करें ।)

सौगन्ध्य- संगत- मधुव्रत- झङ्कृतेन,  
संवर्ण्य- मान- मिव गंध- मनिन्द्य- मादौ ।  
आरोप- यामि विबु- धेश्वर- वृन्द- वन्द्य-  
पादारविन्द- मभिवन्द्य जिनोत्- तमानाम् ॥3॥

ॐ ह्रीं परम-पवित्राय नमः नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा ।





(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

ये सन्ति केचि- दिह दिव्य कुल प्रसूता,  
नागाः प्रभूत- बल- दर्पयुता विबोधाः ।  
संरक्ष णार्थ- ममृतेन शुभेन तेषां,  
प्रक्षाल- यामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् ॥4 ॥

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा ।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठ/सिंहासन का प्रक्षालन करना ।)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,  
प्रक्षालितं सुरवरैर्-यदनेक- वारम् ।  
अत्युद्ध- मुद्यत- महं जिन- पादपीठं,  
प्रक्षाल- यामि भव-सम्भव- तापहारि ॥5 ॥

ॐ हाँ ह्रीं हूँ हौं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा ।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर सिंहासन पर श्री लिखें ।)

श्री- शारदा- सुमुख- निर्गत बीजवर्ण,  
श्रीमङ्गलीक- वर- सर्व जनस्य नित्यम् ।  
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश्य- विघ्नं,  
श्रीकार- वर्ण- लिखितं जिन- भद्रपीठे ॥6 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्रीकार- लेखनं करोमि स्वाहा ।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठिका पर श्रीजी विराजमान करें ।)

यं पाण्डुकामल- शिलागत- मादिदेव-  
मस्नापयन् सुरवराः सुर- शैल- मूर्ध्नि ।  
कल्याण- मीप्सु- रह- मक्षत- तोय- पुष्पैः,  
सम्भावयामि पुर एव तदीय बिम्बम् ॥7 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह पाण्डुक शिला-पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा । जगतः सर्वशान्तिं करोतु ।



(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पल्लवों से सुशोभित मुखवाले स्वस्तिक सहित चार सुन्दर कलश सिंहासन के चारों कोनों पर स्थापित करें ।)

सत्पल्ल-वार्चित-मुखान् कलधौत-रौप्य-ताम्रार-कूट-घटितान् पयसा सुपूर्णान् ।  
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्, संस्थापयामि कलशाज्जिन-वेदिकांते ॥8 ॥  
ॐ ह्रीं स्वस्तये पूर्ण- कलशोद्धरणं करोमि स्वाहा ।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर इन्द्रगण अभिषेक करें ।)

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटी-संलग्न-रत्न-किरणच्छवि-धूस-राध्रिम् ।  
प्रस्वेद-ताप-मल मुक्तमपि प्रकृष्टैर्-भक्त्या जलैर्-जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे ॥9 ॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि- वर्धमानपर्यन्तं- चतुर्विंशति- तीर्थकर- परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे..... देशे... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे श्री 1008 ... जिन चैत्यालयमध्ये वीर निर्वाण सं. ... मासोत्तममासे.... पक्षे... तिथौ.. वासरे.. पौर्वाह्निक / आपराह्निक समये मुन्यार्थिका- श्रावक-श्राविकानां सकल- कर्म- क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः ।

हमने संसार सरोवर में, अब तक प्रभु गोते खाए हैं ।  
अब कर्म मैल के धोने को, जलधारा करने आए हैं ॥

(चारों कलशों से अभिषेक करें ।)

इष्टै- र्मनोरथ- शतैरिव भव्य- पुंसां, पूर्णैः सुवर्ण- कलशै- निखिला- वसानैः ।  
संसार- सागर- विलंघन- हेतु- सेतु- माप्लावये त्रिभुवनैक- पतिं जिनेन्द्रम् ॥10 ॥

अभिषेक मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्षीं क्षीं इवीं इवीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनभिषेचयामि स्वाहा । (यह पढ़कर अभिषेक करें ।)

द्रव्यै- र्नल्प- घनसार- चतुः समाद्यै- रामोद- वासित- समस्त- दिगन्तरालैः ।  
मिश्री-कृतेन पयसा जिन-पुङ्गवानां, त्रैलोक्य पावनमहं स्नपनं करोमि ॥11 ॥

अभिषेक मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं..... जिनाभिषेचयामि स्वाहा ।

उदक चंदन .....महंयजे ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते अभिषेक अन्ते अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(मंगल आरती)

दध्युज्ज्वलाक्षतमनोहरपुष्पदीपैः, पात्रार्पितं प्रतिदिनं महतादरेण ।  
त्रैलोक्यमंगलसुखालयकामदाह- मारार्तिकं तव विभोरवतारयामि ॥28 ॥

(इति मंगल आरती अवतरणं)

## लघु शान्ति धारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः । श्री वीतरागाय नमः । ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थङ्कराय द्वादशगणपरिवेष्टिकाय, शुक्ल ध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयं भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्यासाय, अनन्त संसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशङ्कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणामंडल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, अपवायं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । मृत्युं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । अतिकामं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । रतिकामं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । क्रोधं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । अग्निभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वशत्रुं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वोपसर्गं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वविघ्नं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वराजभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वचौरभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वदुष्टभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वमृगभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वात्मचक्रभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वपरमंत्रं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वशूल रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वक्षय रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वकुष्ठ रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वक्रूर रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वनरमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वगजमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वाश्वमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वगोमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वमहिषमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वधान्यमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्ववृक्षमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वगुल्ममारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वपत्रमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वपुष्पमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वफलमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वराष्ट्र मारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्व देशमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्व विषमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्ववेताल शाकिनी भयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्ववेदनीयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वमोहनीयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद । सर्वकर्माष्टकं छिंद-छिंद भिंद-भिंद ।

ॐ सुदर्शन-महाराज-मम-चक्र विक्रम-तेजो-बल शौर्य-वीर्य शान्तिं कुरु-कुरु । सर्व जनानन्दनं कुरु-कुरु । सर्व भव्यान्दनं कुरु-कुरु । सर्व गोकुलानन्दनं कुरु-कुरु । सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटब पत्तन द्रोणमुख संवाहनन्दनं कुरु-कुरु । सर्व लोकानन्दनं कुरु-कुरु । सर्व देशानन्दनं कुरु-कुरु । सर्व यजमानन्दनं कुरु-कुरु । सर्व दुःख हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्र-शीघ्र ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि-व्यसन-वर्जितं ।

अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते ॥

श्री शान्ति-मस्तु ! (नाम....) कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु । चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रतस्त-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नमः ।

इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक धारा-वर्षणम् ।

शान्ति मंत्र-ॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छुद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय (.....) ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रीं हः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु ।

शान्तिः शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां ।

शान्ति निरन्तर तपोभव भावितानां ॥

शान्तिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां ।

शान्तिः स्वभाव महिमान मुपागतानां ॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां ।

देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्तिं भगवान जिनेन्द्रः ॥

अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं ।

अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु शान्ति धारा देते हैं ॥

अर्घहह उदक चन्दन..... जिन-नाथ-महं यजे ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां अनन्तरे (पश्चात्) अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

## विनय पाठ

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज  
पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ ।  
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ ॥  
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान ।  
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान् ॥  
दुःखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान् ।  
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान ॥  
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज ।  
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज ॥  
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश ।  
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश ॥  
निर्मल भावों से प्रभु, आए तुम्हारे पास ।  
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश ॥  
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार ।  
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार ॥  
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश ।  
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश ॥  
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार ।  
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार ॥  
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान् ।  
भक्त मानकर हे प्रभु ! करते स्वयं समान ॥  
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।  
जब तक मम जीवन रहें, ध्याऊँ तुम्हें सदैव ॥  
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल ।  
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल ॥  
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ति धाम ।  
चौबीसों जिनराज को, करते विशद प्रणाम ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

## मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान् ।  
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान् ॥1॥  
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध ।  
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध ॥2॥  
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय ।  
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय ॥3॥  
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म ।  
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म ॥4॥  
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव ।  
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव ॥5॥  
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार ।  
समृद्धि सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार ॥6॥  
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण ।  
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान ॥7॥

## पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय । नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥1॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः । (पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि । ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।

ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥1॥





अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा ।  
 यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥2॥  
 अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः ।  
 मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलम् मतः ॥3॥  
 एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो ।  
 मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥4॥  
 अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः ।  
 सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥5॥  
 कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम् ।  
 सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ॥6॥  
 विघ्नौघाः प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः ।  
 विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥7॥

(यहां पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

पंचकल्याणक अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः ।  
 धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः ।  
 धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनसहस्रनाम अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः ।  
 धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे ॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।



जिनवाणी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः ।  
 धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायेभ्योः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इत्याशीर्वादः

## स्वस्ति मंगल

श्री मज्झिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम् ।  
 श्रीमूलसङ्घ-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि ॥  
 स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय ।  
 स्वस्ति प्रकाश सहजोर्जितदृष्ट मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय ॥  
 स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;  
 स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय ॥  
 द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः ।  
 आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवलान्; भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं ॥  
 अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।  
 अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नौ; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥  
 ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः ।  
 श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः ।  
 श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः ।  
 श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः ।  
 श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः ।  
 श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः ।  
 श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः ।  
 श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः ।  
 श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः ।

श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः ।  
श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः ।  
श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः ।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः ।  
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥1॥

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतु पदानुसारि ।  
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥2॥  
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि ।  
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्ब्रह्मन्तः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥3॥  
प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः ।  
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥4॥  
जङ्घावलि-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वः ।  
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥5॥  
अणिमि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिमि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि ।  
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥6॥  
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्वर्यं प्राकाम्य मन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।  
तथाऽप्रतीघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥7॥  
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।  
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरन्तः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥8॥  
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषविषाश्च ।  
सखिल्ल-विड्जल्लमलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥9॥  
क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः ।  
अक्षीणसंवास महानसाश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥10॥

(इति पुष्पांजलि क्षेपेत्) (इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)

## मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान् ।  
देव-शास्त्र-गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण ॥  
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण ।  
विद्यमान तीर्थकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान ॥  
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान ।  
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान ॥

ॐ ह्रीं अहं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादि से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं ।  
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं ॥  
जिन तीर्थकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी ।  
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ॥1॥

ॐ ह्रीं अहं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उनसे सतत सताए हैं ।  
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं ॥  
जिन तीर्थकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी ।  
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ॥2॥

ॐ ह्रीं अहं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं ।  
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं ॥



जिन तीर्थकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी ।  
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ॥3॥

ॐ ह्रीं अहं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान  
विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए ।  
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए ॥  
जिन तीर्थकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी ।  
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ॥4॥

ॐ ह्रीं अहं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र,  
विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं ।  
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं ॥  
जिन तीर्थकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी ।  
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ॥5॥

ॐ ह्रीं अहं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र,  
विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं ।  
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं ॥  
जिन तीर्थकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी ।  
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ॥6॥

ॐ ह्रीं अहं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र,  
विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ति हम पाए हैं ।  
अभिव्यक्ति नहीं कर पाए, अतः भवसागर में भटकाए हैं ॥  
जिन तीर्थकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी ।  
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ॥7॥

ॐ ह्रीं अहं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र,  
विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।



फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं ।  
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं ॥  
जिन तीर्थकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी ।  
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ॥8॥

ॐ ह्रीं अहं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र,  
विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं ।  
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं ॥  
जिन तीर्थकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी ।  
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ॥9॥

ॐ ह्रीं अहं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र,  
विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार ।

लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार ॥ शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज ।

सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज ॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण ।

अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान ॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार ।

पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार ॥2॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर ।

कर्म काठ को नाशकर, बड़ें मुक्ति की ओर ॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान ।

स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थकर भगवान् ॥4॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण ।

भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान ॥5॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- तीर्थकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण ।

देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान ॥

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थकर के, महिमा का कोई पार नहीं ।

तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं ॥

विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा ।

उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा ॥1॥

रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल ।

भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल ॥

चौथे काल में तीर्थकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण ।

चौबिस तीर्थकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण ॥2॥

वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस ।

जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश ॥

अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश ।

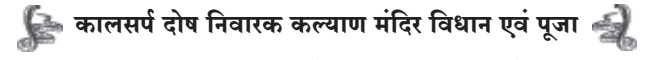
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष ॥3॥

अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है ।

सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है ॥

आचार्योंपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी ।

जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी ॥4॥



प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन ।

वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन ॥

गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश ।

तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश ॥5॥

वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है ।

द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है ॥

यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं ।

शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं ॥6॥

पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है ।

और किसी की बात कहे क्या, तन न साथ निभाता है ॥

गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा ।

संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा ॥7॥

सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान ।

संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान ॥

तीर्थकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान् ।

विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान ॥8॥

शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप ।

जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप ॥

इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान् ।

जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान ॥9॥

दोहा- नेता मुक्ति मार्ग के, तीन लोक के नाथ ।

शिवपद पाने नाथ हम, चरण झुकाते माथ ॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान

विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान् ।

मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

## सर्व ग्रह अरिष्ट निवारक श्री चौबीसी पूजा

(स्थापना)

कर्मों ने काल अनादि से, हमको जग में भरमाया है।  
मिलकर कर्मों के साथ सभी, नवग्रहों ने हमें सताया है॥  
अब सूर्य चंद्र बुध भौम-गुरु, अरु शुक्र शनि राहू केतु।  
आह्वानन करते जिनवर का, हम नवग्रह की शांति हेतु॥  
तुमने कर्मों का अन्त किया, फिर अर्हत् पद को पाया है।  
प्रभु उभयलोक की शांति हेतु, मेरा भी मन ललचाया है॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थकर जिनाः ! अत्र अवतरत-  
अवतरत संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठत-तिष्ठत ठः ठः स्थापनं। अत्र मम्  
सन्निहितो भवत-भवत वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छंद)

हम जन्म मृत्यु अरु जरा के, रोग से दुख पाये हैं।  
उत्तम क्षमादि धर्म पाने, नीर निर्मल लाये हैं॥  
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।  
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थकर जिनेन्द्रेभ्योः जन्म-जरा-  
मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार के संताप से, मन में बहुत अकुलाए हैं।  
अब भव भ्रमण से पार पाने, चरण चंदन लाए हैं॥  
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।  
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थकर जिनेन्द्रेभ्योः  
संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके बहुत अटके जगत में, पार पाने आए हैं।  
अक्षय निधि दो नाथ हमको, अक्षत चढ़ाने लाए हैं॥  
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।  
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थकर जिनेन्द्रेभ्योः अक्षयपदप्राप्तये  
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम विषय तृष्णा के भँवर में, जानकर उलझाए हैं।  
ना काम का हो वास उर में, पुष्प लेकर आए हैं॥  
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।  
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थकर जिनेन्द्रेभ्योः  
कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

मन की इच्छाएँ कभी हम, पूर्ण ना कर पाए हैं।  
अब क्षुधा व्याधी नाश करने, सरस व्यंजन लाए हैं॥  
नव कोटि से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।  
नवग्रह की शांति हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थकर जिनेन्द्रेभ्योः क्षुधारोगविनाशनाय  
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह का तम गहन छाया, दूर ना कर पाए हैं।  
दीप में ज्योति जलाकर, तिमिर हरने आए हैं॥  
नव कोटि से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।  
नवग्रह की शांति हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते॥6॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थकर जिनेन्द्रेभ्योः  
मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुरभित द्रव्यमय शुभ, यहाँ खेने लाए हैं।  
यह आठों है अनादि, शांत करने आए हैं॥  
नव कोटि से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।  
नवग्रह की शांति हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते॥7॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थकर जिनेन्द्रेभ्योः अष्टकर्मदहनाय  
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म के फल प्राप्त करके, यह जगत भटकाए हैं।  
अब मोक्षफल पाने चरण में, फल चढ़ाने लाए हैं॥



नव कोटि से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।  
नवग्रह की शांति हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते ॥८॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनन्द्रेभ्योः मोक्षफलप्राप्त्याय फलं निर्व.स्वाहा।

हम जलादि द्रव्य आठों, का ये अर्घ्य बनाए हैं।  
अब श्रेष्ठ शाश्वत सुपद पाने, को चरण में लाए हैं ॥  
नव कोटि से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।  
नवग्रह की शांति हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते ॥८॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनन्द्रेभ्योः अनर्घपदप्राप्त्याय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

दोहा- जलधारा देते शुभम्, पूजाकर हे नाथ !  
नवग्रह मेरे शांत हों, चरण झुकाएँ माथ ॥

(शांतये शांतिधारा)

दोहा- जगत पूज्य तुम हो प्रभो ! जगती पति जगदीश।  
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश ॥

(दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

**नवग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ्य (चौपाई)**

ग्रहारिष्ट रवि शांति पाए, पद्म प्रभु पद शीश झुकाएँ।  
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ ॥१॥

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट चन्द्र जिन स्वामी, शांति किए होके शिवगामी।  
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ ॥२॥

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं भौम ग्रह भी रह पाए, वासुपूज्य को पूज रचाए।  
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ ॥३॥

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

विमलादी वसु जिन को ध्यायें, ग्रहारिष्ट बुध पूर्ण नशाएँ।  
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ ॥४॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुन्धु, अरह, नमि,  
वर्धमान अष्ट जिनन्द्रेभ्यः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभादी वसु जिन शिवकारी, ग्रहारिष्ट गुरु नाशनहारी।  
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ ॥५॥

ॐ ह्रीं सुरगुरुदोष निवारक श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति,  
सुपारस, शीतल, श्रेयांस अष्ट जिनवरेभ्यः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्रारिष्ट निवारक गाए, पुष्पदन्त स्वामी मन भाए।  
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ ॥६॥

ॐ ह्रीं शुक्रारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत की महिमा गाए, शनि अरिष्ट ग्रह ना रह पाए।  
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ ॥७॥

ॐ ह्रीं शनिग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

राहू ग्रह के है प्रभु नाशी, नेमिनाथ जिन शिवपुर वासी।  
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ ॥८॥

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनन्द्रेभ्यः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट केतू नश जाय, मल्लि पार्श्व का ध्यान लगाय।  
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ ॥९॥

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनन्द्रेभ्यः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस जिनवर को जो ध्याते, ग्रहारिष्ट से शांति पाते।  
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ ॥१०॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनन्द्रेभ्यः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र- ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा सर्व ग्रहारिष्ट शांतिं  
कुरु-कुरु स्वाहा।

**जयमाला**

दोहा- गगन मध्य में ग्रहों का, फैला भारी जाल।  
ग्रह शांति के हेतु हम, गाते हैं जयमाल ॥

ऋषभ चिह्न लख वृषभनाथ पद, 'विशद' भाव से करूँ नमन्।  
गज लक्षण है अजितनाथ का, उनके चरणों नित वंदन ॥  
अश्व चिह्न संभव जिनवर का, नृप जितारि के प्रभु नंदन।  
मर्कट चिह्न चरण अंकित है, अभिनंदन को शत् वंदन ॥

सुमति जिनेश्वर के पद चकवा, जिन का करते अभिनंदन।  
पद्म चिह्न है पद्मप्रभु पद, लेकर पद्म करूँ अर्चन॥  
स्वस्तिक चिह्न सुपार्श्वनाथ का, दर्शन कर नित करूँ भजन।  
चन्द्र चिह्न चंदा प्रभु वंदौ, करूँ निजातम का दर्शन॥  
मगर चिह्न श्री सुविधिनाथ पद, पुष्पदंत उपनाम शुभम्।  
कल्पवृक्ष शीतल जिन स्वामी, मुद्रा जिनकी शांत परम॥  
गेंडा चिह्न चरण में लख के, श्रेयांसनाथ को करूँ नमन।  
भैंसा चिह्न श्री वासुपूज्य पद, देख करूँ शत-शत वंदन॥  
विमलनाथ का चिह्न है सूकर, विमल रहे मेरे भगवन्।  
सेही चिह्न है अनंतनाथ पद, उनको सादर करूँ नमन्॥  
वज्र चिह्न प्रभु धर्मनाथ पद, नमन करूँ हो धर्म गमन।  
शांतिनाथ का हिरण चिह्न शुभ, शांति दो मेरे भगवन्॥  
कुंथुनाथ अज चरण देखकर, पाऊँ मैं सम्यग्दर्शन।  
अरहनाथ का चिह्न मीन है, वीतराग जिन को वन्दन॥  
कलश चिह्न लख मल्लिनाथ को, वंदूँ पाऊँ ज्ञान सघन।  
कछुवा चिह्न मुनिसुव्रत जिन का, वन्दन कर हो जाऊँ मगन॥  
चरण पखारूँ नमिनाथ के, लखकर नीलकमल लक्षण।  
शंख चिह्न पद नेमिनाथ के, इन्द्रिय का जो किए दमन॥  
चिह्न सर्प का पार्श्वनाथ पद, लखकर करूँ चरण वंदन।  
वर्धमान पद सिंह देखकर, करूँ चरण का अभिनंदन॥  
वृषभादि महावीर प्रभु की, करूँ नित्य सविनय पूजन।  
चौबीसों तीर्थकर प्रभु के, चरणों में शत-शत वंदन॥

दोहा- चौबीसों जिन राज की, भक्ति करें जो लोग।

नवग्रह शांति कर 'विशद', शिव का पावें योग॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सोरठा- चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगल परम।

मंगल करें सदैव, नवग्रह बाधा शांत हो॥

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

## राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनपूजा

### स्थापना

नेमिनाथ के श्रीचरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।  
तीर्थकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं॥  
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।  
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वान कर तिष्ठते हैं॥  
राहू अरिष्ट ग्रह शांत करो, प्रभु हमने तुम्हें पुकारा है।  
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है॥

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट्  
आह्वाननं अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट्  
सन्निधिकरणम्।

विषयों के विष की प्याला को, पीकर के जन्म गँवाया है।  
प्रभु जन्म मरण के दुःखों से, छुटकारा ना मिल पाया है॥  
हम मिथ्या मल धोने प्रभुजी, शुभ जल का कलश भराए हैं।  
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं॥1॥

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्पदोष  
निवारणाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादि कषायों के कारण, संताप हृदय में छाया है।  
मन शांत रहे मेरा भगवन्, यह भक्त चरण में आया है॥  
संसार ताप के नाश हेतु, हम शीतल चंदन लाए हैं।  
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं॥2॥

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्पदोष  
निवारणाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर वैभव जान प्रभु, तुमने सब राग नशाया है।  
व्रत संयम तेज तपस्या से, अभिनव अक्षय पद पाया है॥  
हो अक्षय पद प्राप्त हमें भगवन्, हम अक्षय अक्षत लाए हैं।  
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं॥3॥

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्पदोष निवारणाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

है प्रबल काम शत्रु जग में, तुमने उसको तुकराया है ।  
यह भक्त समर्पित चरणों में, तुमसा बनने को आया है ॥  
प्रभु कामवाण के नाश हेतु, यह प्रमुदित पुष्प चढ़ाए हैं ।  
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं ॥4 ॥

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्पदोष निवारणाय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे नाथ ! भोग की तृष्णा ने, अरु क्षुधा ने हमें सताया है ।  
मन मर्कट सब कुछ खाकर भी, न तृप्त पूर्ण हो पाया है ॥  
प्रभु क्षुधा रोग के शमन हेतु, यह व्यंजन सरस ले आए हैं ॥  
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं ॥5 ॥

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्पदोष निवारणाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोहांध महा अज्ञानी हूँ, जीवन में घोर तिमिर छाया ।  
मैं रागी द्वेषी बना रहा, निज के स्वभाव से बिसराया ॥  
मोहांधकार का नाश करूँ, यह दीप जलाने लाए हैं ।  
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं ॥6 ॥

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्पदोष निवारणाय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मों की सेना ने कैसा, यह चक्र व्यूह रचवाया है ।  
मुझ भोले-भाले प्राणी को, क्यों उसके बीच फँसाया है ॥  
अब अष्ट कर्म की धूप जले, यह धूप जलाने लाए हैं ।  
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं ॥7 ॥

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्पदोष निवारणाय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

हमने चित् चेतन का चिंतन, अरु मनन नहीं कर पाया है ।  
सद्दर्शन ज्ञान चरित का फल, शुभ फल निर्वाण न पाया है ॥

अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं ।  
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं ॥8 ॥

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्पदोष निवारणाय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अविचल अनर्घ पद पाने का प्रभु, हमने अब भाव जगाया है ।  
अतएव प्रभु वसु द्रव्यों का, अनुपम यह अर्घ्य बनाया है ॥  
दो पद अनर्घ हमको स्वामी, यह अर्घ्य संजोकर लाए हैं ।  
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं ॥9 ॥

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्पदोष निवारणाय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

### पंचकल्याणक के अर्घ्य

नेमिनाथ भगवान, कार्तिक शुक्ला षष्ठमी ।  
पाए गर्भ कल्याण, शिवा देवी उर आ बसे ॥1 ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठ्यां गर्भ मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा ।

हुआ जन्म कल्याण, श्रावण शुक्ला षष्ठमी ।  
शौर्य पुरी नगरी शुभम्, समुद्र विजय हर्षित हुए ॥2 ॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठ्यां जन्म मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सहस्र आम्रवन बीच, श्रावण शुक्ला षष्ठमी ।  
पशु आक्रंदन देख, तप धारे गिरनार पर ॥3 ॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठ्यां तप कल्याणक मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हुआ ज्ञान कल्याण, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा ।  
स्वपर प्रकाशी ज्ञान, नेमिनाथ जिन पा लिए ॥4 ॥

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पाए पद निर्वाण, आठें शुक्ल अषाढ़ की ।  
हुआ मोक्ष कल्याण, ऊर्जयन्त के शीर्ष से ॥5 ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा ।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं क्लीं हूं राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय  
नमः सर्व शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- समुद्र विजय के लाड़ले, शिवादेवी के लाल ।  
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हैं जयमाल ॥

सुरेन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र गणीन्द्र, शतेन्द्र सुध्यान लगाते हैं ।  
जिनराज की जय जयकार करें, उनका यश मंगल गाते हैं ॥  
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुःख उनके सारे हरते हैं ।  
जो चरण शरण में आ जाते, वह भवसागर से तरते हैं ॥  
तुम धर्ममयी हो कर्मजयी, तुममें जिनधर्म समाया है ।  
तुम जैसा बनने हेतु नाथ !, यह भक्त चरण में आया है ॥  
प्रभु द्रव्य भाव नोकर्म सभी, अरु राग द्वेष भी हारे हैं ।  
जो तन में रहते हुए विशद, रहते उससे अति न्यारे हैं ॥  
जिसको भव सुख की चाह नहीं, वह दुःख से क्या भय खाते हैं ।  
वह महावली जिन धीर वीर, भवसागर से तिर जाते हैं ॥  
जो दयावान करुणाधारी, वात्सल्यमयी गुणसागर हैं ।  
वह सर्वसिद्धियों के नायक, शुभ रत्नों के रत्नाकर हैं ॥  
शुभ नित्य निरंजन शिव स्वरूप, चैतन्य रूप तुमने पाया ।  
उस मंगलमय पावन पवित्र, पद पाने को मन ललचाया ॥  
कर्मों के कारण जीव सभी, भव सागर में गोते खाते ।  
जो शरण आपकी आते हैं, वह उनके पास नहीं आते ॥  
तुम हो महान् अतिशय धारी, तुम विधि के स्वयं विधाता हो ।  
सुर नर नरेन्द्र की बात कहाँ, तुम तो जन-जन के त्राता हो ॥  
तुम हो अनन्त ज्ञाता दृष्टा, चिन्मूरत हो प्रभु अविकारी ।  
जो शरण आपकी आ जाए, वह बने स्वयं मंगलकारी ॥  
जो मोह महामद मदन काम, इत्यादि तुमसे हारे हैं ।  
जो रहे असाता के कारण, चरणों झुक जाते सारे हैं ॥

ज्यों तरु के नीचे आने से, राही शीतल छाया पाता ।  
प्रभु के शरणागत आने से, स्वमेव आनन्द समा जाता ॥  
तुमने पशुओं का आक्रन्दन, लख कर संसार असार कहा ।  
यह तो अनादि से है असार, इसका ऐसा स्वरूप रहा ॥  
हे जगत पिता ! करुणा निधान, यह सब तो एक बहाना था ।  
शायद कुछ इसी बहाने से, राजुल को पार लगाना था ॥  
राजुल का तुमने साथ दिया, उससे नव भव की प्रीति रही ।  
पर हमसे प्रीति निभाई न, वह खता तो हमसे कहो सही ॥  
अब शरण खड़ा है शरणागत, इसका भी बेड़ा पार करो ।  
कह रहा भक्ति के वशीभूत, हे ! दयासिंधु स्वीकार करो ॥  
जो शरण आपकी आ जाए, वह भव में कैसे भटकेगा ।  
जो भक्ति भाव से गुण गाए, वह जग में कैसे अटकेगा ॥  
तुम तीर्थंकर बाइसर्वे प्रभु, तुम बाईस परीषह को जीते ।  
तुमने अनन्त बल सुख पाया, तुम निजानन्द रस को पीते ॥  
जैसे प्रभु भव से पार हुए, वैसे मुझको भी पार करो ।  
हमको आलम्बन दे करके, प्रभु इस जग से उद्धार करो ।  
जो भाव सहित पूजा करते, वह पूजा का फल पाते हैं ॥  
पूजा के फल से भक्तों के, सारे संकट कट जाते हैं ।  
हम जन्म-जरा के संकट से, घबड़ाकर चरणों आये हैं ।  
अब उभय रूप प्रभु मोक्ष महापद, पाने को शीश झुकाये हैं ॥

छन्द-घत्तानन्द

जय नेमि जिनेशं, हितउपदेशं, शुद्ध बुद्ध चिद्रूपयति ।

जय परमानन्दं, आनन्दकंदं, दयानिकंदं ब्रह्मपति ॥

ॐ ह्रीं सर्व राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्प दोष  
निवारणाय अनर्घ्यपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- नेमिनाथ के द्वार पर, पूरी होती आश ।

मुक्ति हो संसार से, पूरा है विश्वास ॥

इत्याशीर्वाद (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

## केतू ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्वनाथ पूजा (स्थापना)

मल्लिनाथ श्री पार्श्वनाथ जिन, हैं अतिशय के धारी।  
कर्म नाशकर मोक्ष पधारे, जग जन मंगलकारी॥  
केतू अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, हम चरणों शीश झुकाएँ।  
आह्वानन कर तिष्ठाएँ उर, भक्ति से गुण गाएँ॥  
हे करुणाकर ! करुणा करके, हृदय में आसन पाओ।  
यह भक्त खड़े हैं आश लिए, तुम दर्शन दो उर में आओ॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-  
अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ  
भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

क्षीर नीर सम जल अति निर्मल, रत्न कलश भर लाये हैं।  
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, तव चरणों में आये हैं॥  
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।  
मल्लि पार्श्वजिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां जन्म-जरा-  
मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शरद चन्द्र से भी अति शीतल, कर में चंदन लाये हैं।  
भव आताप नशाने हेतू, चरण शरण में आये हैं॥  
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।  
मल्लि पार्श्वजिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां संसारताप  
विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद को पाने हेतु, अक्षत थाल सजाए हैं।  
अक्षय अमल अखंड भाव से, तव चरणों में आए हैं॥

हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।  
मल्लि पार्श्वजिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां अक्षयपदप्राप्तये  
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामबाण की महावेदना, से हम बहुत सताए हैं।  
अनुपम पुष्प सुगंधित लेकर, तव चरणों में आए हैं॥  
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।  
मल्लि पार्श्वजिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां कामबाण  
विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा वेदना को हम अब तक, शांत नहीं कर पाये हैं।  
नैवेद्य सुसुंदर लेकर के, हम क्षुधा नशाने आये हैं॥  
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।  
मल्लि पार्श्वजिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां क्षुधारोग विनाशनाय  
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन थाल में दीप जलाकर, प्रभु चरणों में आये हैं।  
मोह महातम नाश करो मम, आरति करने लाये हैं॥  
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।  
मल्लि पार्श्वजिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां मोहांधकार  
विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलाते रहे आज तक, कर्म नहीं जल पाये हैं।  
आठों कर्म नशाने हेतु, धूप चरण में लाये हैं॥  
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।  
मल्लि पार्श्वजिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां अष्टकर्म दहनाय  
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।





पिस्ता अरु बादाम सुपारी, श्रीफल लेकर आये हैं।  
मोक्ष महाफल पाने हेतू, भाँति-भाँति फल लाये हैं॥  
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।  
मल्लि पार्श्वजिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां मोक्षफलप्राप्तये  
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन के कलश थाल में, अक्षत पुष्प सजाये हैं।  
चरुवर दीप धूप फल लेकर, अर्घ चढ़ाने आये हैं॥  
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।  
मल्लि पार्श्वजिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां अनर्घ्यपदप्राप्तये  
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

### पंचकल्याणक के अर्घ्य

शुभ चैत्र सुदी एकम् मल्लि जिन, माता के गर्भ में आये थे।  
इन्द्रों ने छह महीने पहले से, रत्नों के मेह बरसाये थे॥  
दूज बदी बैशाख पार्श्व जिन, गर्भ कल्याणक पाए थे।  
वामा माता को पहले ही, जो सोलह स्वप्न दिखाये थे॥1॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक गर्भकल्याणकप्राप्त श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां  
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ जिन जन्म लिया तिथि, मगसिर सुदि ग्यारस प्यारी।  
राजा कुम्भ के गृह में अनुपम, जय-जय कार हुआ भारी॥  
पौष बदी ग्यारस को जन्में, पार्श्वनाथ जिनवर स्वामी।  
अश्वसेन के गृह में आए, विघ्नहरण अन्तर्यामी॥2॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक जन्मकल्याणकप्राप्त श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां  
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी ग्यारस दिन पावन, जग से मुख को मोड़ दिये।  
मल्लिनाथ जिन वीतराग हो, संयम से नाता जोड़ लिए॥



पौष बदी ग्यारस को भगवन्, पार्श्वनाथ संयम पाए।  
तप कल्याणक पूजा करके, इन्द्र नरेन्द्र सब हर्षाए॥3॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक तपकल्याणकप्राप्त श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां  
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष बदी द्वितिया मल्लि जिन, कर्म घातिया नाश किए।  
समवशरण रचना सुर कीन्ही, केवलज्ञान प्रकाश किए॥  
चैत्र कृष्ण की चौथ पार्श्व जिन, केवलज्ञान जगाए थे।  
सुर नरेन्द्र सब हर्ष मनाए, गंधोदक वर्षाए थे॥4॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक ज्ञानकल्याणकप्राप्त श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां  
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरि सम्मेदशिखर के ऊपर, फाल्गुन सुदी पंचमी वार।  
मल्लिनाथ जिन मोक्ष पधारे, हुई लोक में जय-जयकार॥  
श्रावण शुक्ला सप्तमी को प्रभु, पार्श्वनाथ ने कर्म क्षये।  
गिरि सम्मेद शिखर पर जाकर, स्वर्ण भद्र से मोक्ष गये॥5॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक मोक्षकल्याणकप्राप्त श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां  
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व  
जिनेन्द्राय नमः सर्व शांतिं कुरु-कुरु स्वाहा।

### जयमाला

दोहा- मल्लिनाथ जिन पार्श्व के, चरणों विशद प्रणाम।  
गाते हम जयमालिका, पूर्ण होंय सब काम॥

(तर्ज-तेरे पांच हुए कल्याण प्रभु...)

किया तूने जगत् उद्धार प्रभु, अब मेरा भी तो उद्धार कर दो।  
तुम सद्ज्ञानी आतमज्ञानी, हमें भवसागर से पार कर दो॥  
नहीं लोक में तुम सम कोई, औरों का कल्याण करे।  
नहीं मिला कोई हमको ऐसा, दूर मेरा अज्ञान करे॥

अब मैं चाहूँ भगवन् मेरे, मैं ज्ञान सहित आचरण करूँ।  
 वह दान मुझे आचार कर दो॥  
 सता रहे हैं कर्म अनेकों, मोहादि ने मोह लिया।  
 सत्पथ पर न बढ़े कभी भी, मिथ्या ने मजबूर किया॥  
 अब मैं चाहूँ जिनवर-जिनवर, जो रत्नत्रय है धर्म मेरा।  
 उस धर्म के अब आधार कर दो॥  
 भटक रहा अंजान मुसाफिर, मंजिल की शुभ आस लिए।  
 रफता-रफता बढ़ते आया, दर पे तेरे विश्वास लिए॥  
 अब मैं चाहूँ भगवन्-भगवन्, तू है दाता ईश्वर सबका।  
 अब दूर मेरा आगार कर दो॥  
 तेरी महिमा अगम अगोचर, जग में एक सहारा है।  
 जग में रहकर जग से न्यारा, सबका तारण हारा है॥  
 अब मैं चाहूँ भगवन्-भगवन्, जो वीतरागमय रूप तेरा।  
 उस रूप मेरा आकार कर दो॥  
 जग को तेरी बहुत जरूरत, तू जग का रखवाला है।  
 तू है मंदिर, तू है मस्जिद, 'विशद' ज्ञान की शाला है॥  
 अब मैं चाहूँ भगवन्-भगवन्, जो नित्य निरंजन रूप मेरा।  
 वह निराकार आकार कर दो॥  
 जिसने प्रभु जी तुमको ध्याया, उसका कष्ट मिटाया है।  
 बिन माँगे ही सद्भक्तों ने, मन वांछित फल पाया है॥  
 अब मैं चाहूँ जिनवर-जिनवर, मैं तेरा ही गुणगान करूँ।  
 उस ज्ञान का मुझको दान कर दो।

(छन्द-घत्तानन्द)

जो प्रभु को ध्यावें, प्रभु गुण गावें, भक्ति भाव से सिर नावें।  
 वह पुण्य कमावें, पाप नशावें, अनुक्रम से मुक्ति पावें॥

ॐ ह्रीं केतू ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां जयमाला पूर्णार्घ्य  
 निर्वपामीति स्वाहा।

## कालसर्प दोष निवारण अर्घ्य (मण्डल पर आठों दिशाओं में अर्घ्य चढ़ाएँ)

(शम्भू छन्द)

ॐकारमय दिव्य देशना, तीर्थकर की रही महान्।  
 अहं शब्द है अर्द्ध मात्रिक, अकारादिस्वर सहित प्रधान॥  
 अष्ट द्रव्य का अर्घ्य मिलाकर, अर्घ्य चढ़ाते यह शुभकार।  
 पूर्व दिशा में अर्चा करते, सर्व स्वर्गों की बारम्बार॥1॥

ॐ ह्रीं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ए ऐ ओ औ अं अः अनाहत पराक्रमाय  
 कालसर्प दोष निवारक सिद्धाधिपतये नमः पूर्वदिशि आगतकष्ट निवारणाय अर्घ्य  
 निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

वर्ण 'क' वर्ग के हैं शुभकारी, काल अनादि मंगलकारी।  
 अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, अग्निकोण में पूज रचाते॥2॥

ॐ ह्रीं क ख ग घ ङ अनाहत पराक्रमाय कालसर्प दोष निवारक सिद्धाधिपतये  
 आग्नेयदिशि आगतकष्ट निवारणाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण 'च' वर्ग के हैं शुभकारी, ज्ञान प्रदायक मंगलकारी।  
 दक्षिण दिशि में पूज रचाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥3॥

ॐ ह्रीं च छ ज झ ञ अनाहतपराक्रमाय कालसर्प दोष निवारक सिद्धाधिपतये  
 दक्षिणदिशि आगतकष्ट निवारणाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण 'ट' वर्ग के मंगलकारी, भवि जीवों के हैं हितकारी।  
 दिशि नैऋत्य में पूज रचाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥4॥

ॐ ह्रीं ट ठ ड ढ ण अनाहत पराक्रमाय कालसर्प दोष निवारक सिद्धाधिपतये  
 नैऋत्यदिशि आगतकष्ट निवारणाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण 'त' वर्ग के पावन गाये, प्राणी अपने हृदय सजाये।  
 दिशि पश्चिम में पूज रचाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥5॥

ॐ ह्रीं त थ द ध न अनाहत पराक्रमाय कालसर्प दोष निवारक सिद्धाधिपतये  
 पश्चिमदिशि आगतकष्ट निवारणाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण 'प' वर्ग शुभम् कहलाए, जीवों को सद राह दिखाए।  
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाएँ, वायव्य दिशि में पूज स्वाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं प फ ब भ म अनाहत पराक्रमाय कालसर्प दोष निवारक सिद्धाधिपतये  
वायव्यदिशि आगतकष्ट निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण 'य' वर्ग की महिमा न्यारी, अक्षर जग में मंगलकारी।  
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, उत्तर दिशि में पूज स्वाते॥7॥

ॐ ह्रीं य र ल व अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये उत्तरदिशि आगतकष्ट निवारणाय  
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेष वर्ण 'श' आदि जानो, स्वर व्यंजन के कारण मानो।  
दिश ईशान रही सुखदायी, अर्घ्य चढ़ाते हैं हम भाई॥8॥

ॐ ह्रीं श ष स ह अनाहत पराक्रमाय कालसर्प दोष निवारक सिद्धाधिपतये  
ईशानदिशि आगतकष्ट निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## परमेष्ठी आदि के अर्घ्य

(चाल छंद)

जिनवर की भक्ति निराली, है कर्म नशाने वाली।  
जो चरण-शरण को पाए, अपना सौभाग्य जगाए॥1॥

ॐ ह्रीं कालसर्पदोषनिवारक श्री अर्हत्जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।  
जो सिद्ध प्रभु को ध्याए, गुण सिद्धों के वह पाए।  
जो भक्ति भाव से जाए, अपना सौभाग्य जगाए॥2॥

ॐ ह्रीं कालसर्पदोषनिवारक श्री सिद्ध जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।  
है पञ्चाचार के धारी, आचार्य गुरु अविकारी।  
जो भाव से गुरु को ध्याए, अपना सौभाग्य जगाए॥3॥

ॐ ह्रीं कालसर्पदोषनिवारक श्री सूरिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।  
हैं ज्ञान ध्यान तपधारी, गुरु उपाध्याय अनगारी।  
जो सम्यक् ज्ञान जगाए, वह सुख-शांति पा जाए॥4॥

ॐ ह्रीं कालसर्पदोषनिवारक श्री पाठकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु रत्नत्रय पाएँ, संयम धर कर्म नशाएँ।  
जो सर्व साधु को ध्याएँ, अपना सौभाग्य जगाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं कालसर्पदोषनिवारक श्री सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।  
हम पंच परम गुरु ध्याएँ, दुःखों से मुक्ति पाएँ।  
यह कालसर्प विनिवारी, होते जिन संकटहारी॥6॥

ॐ ह्रीं कालसर्पदोषनिवारक श्री पञ्च परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।  
'अ' ज्ञान अनन्त जगाए, 'र' ऊर्ध्व गति पहुँचाए।

'ह' कर्मों का है नाशी, बिन्दु अनन्त की राशि॥  
जो नित अहं को ध्याए, भक्ति से अर्घ्य चढ़ाए।

अपना सौभाग्य जगाए, अनुक्रम से मुक्ति पाए॥7॥

ॐ ह्रीं कालसर्पदोषनिवारक श्री अहं वर्णेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।  
जो घाति कर्म नशाएँ, वह केवलज्ञान जगाएँ।

शुभ सहस्र नाम को पाएँ, जिन अष्टम वसुधा जाएँ॥  
हम सहस्र नाम को ध्याएँ, यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ।

चौबिस जिनराज हमारे, हैं जग के पालन हारे॥8॥

ॐ ह्रीं कालसर्पदोषनिवारक श्री सहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।  
बीजाक्षर से निर्मित होते, रक्षा करी मंत्र महान्।

संकट में जो पड़े भाव से, उनकी रक्षा होय प्रधान॥9॥

ॐ ह्रीं हूं क्षूं फट् किरटिं किरटिं घातय घातय परविघ्नान स्फोटय स्फोटय सहस्र  
खण्डान कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द-छिन्द परमंत्रान् भिन्द-भिन्द क्षां क्षः वाः वः  
कालसर्प दोष निवारणाय हूं फट् स्वाहा। (अर्घ्यं)

कलीकुण्ड का मंत्र श्रेष्ठ शुभ, श्रेष्ठ सौख्य उपजाता है।

भाव शुद्ध हो जाप करे जो, उसके विघ्न नशाता है॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अहं कलिकुण्ड श्री पार्श्वनाथ धरणेन्द्र पद्मावती सेविताय अतुल  
बल वीर्य पराक्रमाय ममात्म विद्यां रक्ष-रक्ष परविद्यां छिन्द-छिन्द भिन्द-भिन्द  
स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौं स्फ्रः कालसर्प दोष निवारणाय हूं फट् स्वाहा।

## श्री पार्श्वनाथ पूजा प्रारम्भ

(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ ।  
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ ॥  
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से ।  
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से ॥  
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन ।  
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

(शम्भू छन्द)

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं ।  
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारिद हरते हैं ॥  
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं ।  
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं ॥1 ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय जन्म-जरा-  
मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं ।  
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं ॥  
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं ।  
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं ॥2 ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय भवाताप  
विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं ।  
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, प्रभु चरणों में सिर धरते हैं ॥

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं ।

पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं ॥3 ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अक्षयपद  
प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभु की पूजा करते हैं ।  
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के झरने झरते हैं ।  
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं ।  
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं ॥4 ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय कामबाण  
विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं ।  
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं ॥  
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं ।  
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं ॥5 ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय क्षुधारोग  
विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभु की आरति करते हैं ।  
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मों से डरते हैं ॥  
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की पूजन आज रचाते हैं ।  
पद पंकज में विशद भाव से अपना शीश झुकाते हैं ॥6 ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय महामोहान्धकार  
विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन केशर आदि सुगंधित, धूप दशांग मिलाये हैं ।  
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं ॥



विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।

पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।

श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं॥

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।

पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ्य समर्पित करते हैं।

पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं॥

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।

पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पंचकल्याणक युत पार्श्व प्रभु की पूजा**

(त्रिभंगी छन्द)

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिये।

वसुदेव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए॥

श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।

त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ॥1॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायाम् गर्भमंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशि, कृष्णा की निशी काशी में अवतार लिया।

देवों ने आकर बाद्य बजाकर, आनन्दोत्सव महत किया॥



श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।

त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ॥2॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलि पौष एकादशि व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया।

भा बारह भावन अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया॥

श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।

त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ॥3॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहिक्षेत्र में कीन्ही मनमानी।

तब चैत अंधेरी, चौथ सबेरी, आप हुए केवलज्ञानी॥

श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।

त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ॥4॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण चतुर्थी दिवसे श्री अहिक्षेत्रतीर्थ केवलज्ञानप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातें सावन, अतिमन भावन, सम्पेद शिखर पे ध्यान किए।

वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए॥

श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।

त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ॥5॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्याम् सम्पेदशिखर सुवर्णभद्रकूटे मोक्षमंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं कालसर्प दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

**जयमाला**

दोहा - माँ वामा के लाड़ले, अश्वसेन के लाल।

विघ्न विनाशक पार्श्व की, कहते हैं जयमाल ॥1॥



(छन्द : नयमाली एवं चण्डी)

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।  
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते॥2॥  
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।  
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते॥3॥  
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।  
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते॥4॥  
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।  
तीर्थकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते॥5॥  
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।  
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम माथ नमस्ते॥6॥  
जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।  
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते॥7॥  
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नत्रय युक्त नमस्ते।  
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते॥8॥  
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।  
जित उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित शत इन्द्र नमस्ते॥9॥

दोहा- भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।

सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ॥10॥

ॐ ह्रीं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, विशद मोक्ष कल्याण।

प्राप्त किये जिन देव ने, तिनको करूँ प्रणाम॥

इति पुष्पाजलिं क्षिपेत्।

कालसर्प दोष निवारक विशेष पूजा

अष्टदलकमल पूजा

दोहा- परम ब्रह्म के कोष हैं, पार्श्वनाथ भगवान।  
विशद भाव से कर रहे, जिनपद का गुणगान॥

मण्डलस्योपरि पुष्पाजलिं क्षिपेत्

(अभीप्सित कार्य सिद्धिदायक)

क ल्याण - मन्दिरमुदारमवद्य - भे दि  
भीताभय - प्रदमनिन्दितमङ्घ्रि - पदमम्।  
संसार - सागर - निमज्जदशेष - जन्तु -  
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य॥1॥

चौपाई- हे कल्याण धाम गुणवान, भव सर तारक पोत महान्।

शिव मंदिर अघहारक नाम, पार्श्वनाथ के चरण प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं भवसमुद्र तारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सिद्धिदायक)

यस्य स्वयं सुरगुरु - गरिमाम्बुराशेः  
स्तोत्रं सुविस्तृत - मति - न विभु - विधातुम्।  
तीर्थेश्वरस्य कमठ - स्मय - धूमकेतोस्  
तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये॥2॥

सागर सम हे गौरवान !, सुर गुरु न कर सके बखान।

भंजन किया कमठ का मान, तब करता प्रभु मैं गुणगान॥2॥

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जलभय निवारक)

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप -  
मस्मादृशः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः।



धृष्टोऽपि कौशिक-शिशु-र्यदि वा दिवान्धो,  
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥३॥

तव स्वरूप प्रभु अगम अपार, मंदबुद्धि न पावे पार।  
प्रखर सूर्य ज्यों आभावान, उल्लू देख सके न आन ॥३॥

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प  
दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(असमय निधन निवारक)

मोह-क्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो  
नूनं गुणान्गणयितुं न तव क्षमेत।  
कल्पान्त-वान्त-पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्  
मीयेत केन जलधे-र्ननु रत्नराशिः ॥४॥

मोह की भी हो जाए हान, कह पावे तव को गुणगान।  
जल सागर से भी बह जाय, प्रकट रत्न भी को गिन पाय ॥४॥

ॐ ह्रीं गहनगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प  
दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(प्रछन्न धन प्रदर्शक)

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि,  
कर्तुं स्तवं लसदसंख्य-गुणाकरस्य।  
बालोऽपि किं न निज-बाहु-युगं वितत्य,  
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः ॥५॥

तुम गुण रत्नों के आगार, मैं मतिहीन बुद्धि अनुसार।  
ज्यों बालक निजबाँह पसार, उद्यत करने सागर पार ॥५॥

ॐ ह्रीं परमोन्नतगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम  
कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



(संतान सम्पत्ति प्रदायक)

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !  
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।  
जाता तदेवमसमीक्षित-कारितेयं,  
जल्पन्ति वा निज-गिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥६॥

तव गुण गाने को लाचार, योगीजन भी माने हार।  
ज्यों पक्षी बोले निज बान, त्यों करते हम तव गुणगान ॥६॥

ॐ ह्रीं अगम्यगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प  
दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अभीप्सित जनाकर्षक)

आस्तामचिन्त्य-महिमा जिन संस्तवस्ते,  
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।  
तीव्राऽऽतपोपहत पान्थ-जनान्निदाधे-  
प्रीणाति पद्म-सरसः स-रसोऽनिलोऽपि ॥७॥

तव महिमा जिन अगम अपार, नाम एक जग जन आधार।  
पवन पद्म सरवर से आय, ग्रीष्म तपन को पूर्ण नशाय ॥७॥

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प  
दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कुपितोपिदंश विनाशक)

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवन्ति,  
जन्तो क्षणेन निबिडा अपि कर्म-बन्धाः।  
सद्यो भुजंगम-मया इव मध्य-भाग-  
मभ्यागते वन-शिखण्डिनि चन्दनस्य ॥८॥

मन से ध्याये जिन अर्हन्त, कर्म बन्ध हो शिथिल तुरन्त।  
बोले ज्यों चन्दन तरु मोर, नाग डरें भागें चहुँ ओर ॥८॥



ॐ ह्रीं कर्मबन्धविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**अष्ट कमल दल है शुभकार, जो नर पूजें विविध प्रकार ।**

**सुर नर पूजित रहे विशेष, दुखहर्ता जिन पार्श्व जिनेश ॥**

ॐ ह्रीं अष्टदल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**षोडशदल कमल पूजा**

**(सर्पवृश्चिकविष विनाशक)**

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र !

रौद्रै-रुपद्रव-शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।

गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे,

चौरैरिवाऽऽशु पशवः प्रपलायमानैः ॥९॥

**(शम्भू छंद)**

हे जिनेन्द्र तव दर्शन करके, विपदाओं का होय विनाश ।

अंधकार भग जाता जैसे, उदित सूर्य का होय प्रकाश ॥

पशुओं को रात्रि में जैसे, आकर घेर रहे हों चोर ।

गौ स्वामी को देख भागते, डर के कारण होते भोर ॥

ॐ ह्रीं दुष्टोपसर्गविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**(तस्कर भय विनाशक)**

त्वं तारको जिन कथं भविनां त एव,

त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः ।

यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-

मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥१०॥

तुमको हृदय बसाने वाला, हो जाता है भव से पार ।

भवि जीवों के लिए आप हो, चिन्तन का अनुपम आधार ॥



**वायु पूरित मसक तैरकर, हो जाती है सागर पार ।**

**मन मंदिर में तुम्हें बसाने, से जीवों का हो उद्धार ॥१०॥**

ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**(जलान्निभय विनाशक)**

यस्मिन्हर्-प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावाः,

सोऽपि त्वया रति-पतिः क्षपितः क्षणेन ।

विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन,

पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन ॥११॥

हरि-हर आदि महापुरुष भी, कामदेव से हारे हैं ।

कामदेव के बाण आपने, क्षण में जीते सारे हैं ॥

दावानल का पानी जैसे, कर देता है पूर्ण विनाश ।

उसी नीर का क्रोधित होकर, बड़वानल कर देता नाश ॥११॥

ॐ ह्रीं अनंगमथनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**(अग्नि भय विनाशक)**

स्वामिन्ननल्प-गरिमाणमपि प्रपन्नास्-

त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ।

जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,

चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥१२॥

अन्य किसी से जिनकी तुलना, करना सम्भव नहीं अरे ।

ऐसे प्रभु के गुण अनन्त का, कैसे कोई गुणगान करे ॥

प्रभु को हृदय बसाते हैं जो, भवसागर तिर जाते हैं ।

है अचिन्त्य महिमा श्री जिन की, चिन्तन में न आते हैं ॥१२॥

ॐ ह्रीं अतिशयगुरवे क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(जलभिष्टता कारक)

क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो,  
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्म-चौराः ।  
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,  
नील-द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥13॥

सबसे पहले प्रभु आपने, क्रोध शत्रु का नाश किया ।  
क्रोध बिना फिर कहो आपने, कैसे कर्म विनाश किया ॥  
बर्फ लोक में ठण्डा होकर, वृक्षों को झुलसाता है ।  
क्षमाजयी प्रभु तुमरे द्वारा, बैरी जीता जाता है ॥13॥

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प  
दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(शत्रु स्नेह जनक)

त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप-  
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज-कोष-देशे ।  
पूतस्य निर्मल-रुचे र्यदि वा किमन्य-  
दक्षस्य संभव-पदं ननु कर्णिकायाः ॥14॥

श्रेष्ठ महर्षी प्रभु आपकी, महिमा अनुपम गाते हैं ।  
हृदय कमल में ज्ञान नेत्र से, अन्वेषण कर ध्याते हैं ॥  
कमल कर्णिका श्रेष्ठ बीज का, है पवित्र उत्पत्ति स्थान ।  
हृदय कमल के मध्य भाग में, शुद्धात्म का होता ध्यान ॥14॥

ॐ ह्रीं महन् मृग्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प  
दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चोरिकागत द्रव्य दायक)

ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन,  
देहं विहाय परमात्म-दशां व्रजन्ति ।

तीव्रानलादुपल-भावमपास्य लोके,  
चामीकरत्वमचिरादिव धातु-भेदाः ॥15॥

धातु शिला अग्नि को पाकर, तजती किट्ट कालिमा रूप ।  
पत्थर की पर्याय छोड़कर, हो जाता है स्वर्ण स्वरूप ॥  
ऐसे ही संसारी प्राणी, करें आपका निश्चल ध्यान ।  
परमात्म पद पाने वाले, बने वीतरागी विज्ञान ॥15॥

ॐ ह्रीं कर्मकिट्टदहनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम  
कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(गहन वन पर्वत भय विनाशक)

अन्तः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं,  
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ।  
एतत्स्वरूपमथ मध्य-विवर्तिनो हि,  
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥16॥

जिस शरीर के मध्य बिठाकर, भविजन तुमको ध्याते हैं ।  
उस शरीर को आप जिनेश्वर, फिर क्यों नाश कराते हैं ॥  
राग-द्वेष से रहित जीव का, विग्रह ही स्वभाव रहा ।  
कायद्वेष को शमित किया है, सत्पुरुषों ने पूर्ण अहा ॥16॥

ॐ ह्रीं देहदेहिकलहनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः  
मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(युद्ध विग्रह विनाशक)

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद-बुद्ध्या,  
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः ।  
पानीय-मप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं,  
किं नाम नो विष-विकारमपाकरोति ॥17॥



जब अभेद बुद्धि के द्वारा, योगी करें आपका ध्यान।  
है प्रभाव यह प्रभु आपका, हो जाते हैं आप समान॥  
यह अमृत है ऐसी श्रद्धा, करके जल पीते जो लोग।  
विष विकार के मंत्रित जल से, होता है क्या नहीं वियोग॥17॥

ॐ ह्रीं संसारविषसुधोपमाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम  
कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सर्प विष विनाशक)

त्वामेव वीत-तमसं परवादिनोऽपि,  
नूनं विभो हरि-हरादि-धिया प्रपन्नाः।  
किं काच-कामलिभिरीश सितोऽपि शंखो,  
नो गृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण॥18॥  
अज्ञानी प्राणी कहते हैं, तुमको ब्रह्मा विष्णु महेश।  
अन्यमतावलम्बी पूजा शुभ, करें आपकी श्रेष्ठ जिनेश॥  
निश्चित मानो प्यारे भाई, जिनको हुआ पीलिया रोग।  
श्वेत शंख भी पीला दिखता, उस बीमारी के संयोग॥18॥

ॐ ह्रीं सर्वजनवन्द्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम  
कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नेत्ररोग विनाशक)

धर्मोपदेश-समये सविधानुभावा-  
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः।  
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,  
किं वा विबोधमुपयाति न जीव लोकः॥19॥  
धर्म देशना के अवसर पर, जो आ जाए तुमरे पास।  
मानव की क्या बात शोक तरु, हो अशोक का पूर्ण विनाश॥  
सूर्योदय होने पर केवल मानव, ही ना पाते बोध।  
वनस्पति भी निद्रा तजकर, पा लेती है पूर्ण विबोध॥19॥



ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः  
मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उच्चाटन कारक)

चित्रं विभो कथमवाङ्मुख-वृन्तमेव,  
विष्वक्पतत्यविरला सुर-पुष्प-वृष्टिः।  
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !  
गच्छन्ति नूनमथ एव हि बन्धनानि॥20॥

सघन पुष्प वृष्टी की जाती, देवों द्वारा अपरम्पार।  
डन्ठल नीचे ऊर्ध्व पाँखुरी, होती पुष्पों की शुभकार॥  
मानो डण्ठल सूचित करते, आते हैं जो तुमरे पास।  
कर्मों के बन्धन भव्यों के, हो जाते हैं पूर्ण विनाश॥20॥

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिशोभिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः  
मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानवृद्धि प्रदायक)

स्थाने गंभीरहृदयोदधि-सम्भवायाः,  
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।  
पीत्वा यतः परम-सम्मद-संग-भाजो,  
भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम्॥21॥

प्रभु गम्भीर हृदय के सागर, से मुखरित हैं दिव्य वचन।  
सच है सुधा समान मानते, तीन लोक में सारे जन॥  
अमृतवाणी पीके प्राणी, अक्षय सुख पा जाते हैं।  
आकुलता को तजने वाले, अजर-अमर पद पाते हैं॥21॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि विराजिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः  
मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



(मधुर फल प्रदायक)

स्वामिन्सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,  
मन्ये वदन्ति शुचयः सुर-चामरौघाः ।  
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि-पुंगवाय,  
ते नूनमूर्ध्व-गतयः खलु शुद्ध-भावाः ॥22॥  
चँवर दुराते देव तो पहले, नीचे फिर ऊपर जाते ।  
मानो जग जीवों को झुककर, विनय शीलता सिखलाते ॥  
'विशद' भाव से करते हैं जो, श्री जिनेन्द्र के चरण नमन ।  
कर्म नाशकर के वह प्राणी, जाते हैं फिर मोक्ष सदन ॥22॥

ॐ ह्रीं सुरचामरसहित विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(राज्य सन्मानदायक)

श्यामं गभीर-गिरमुज्ज्वल-हेम-रत्न-  
सिंहासनस्थमिह भव्य-शिखण्डिनस्त्वाम् ।  
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैश्  
चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥23॥  
सिंहासन स्वर्णिम कंचनमय, पर स्थित हैं श्री जिनेश ।  
दिव्य ध्वनि प्रगटाते अनुपम, श्यामल तन में प्रभु विशेष ॥  
होता स्वर्ण सुमेरु पर ज्यों, काले मेघों का गर्जन ॥  
हर्षित होकर भव्य मोर ज्यों, करें आपका अवलोकन ॥23॥

ॐ ह्रीं पीठत्रयनायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(शुष्कवनोपवन विनाशक)

उद्गच्छता तव क्षिति-द्युति-मण्डलेन,  
लुप्त-च्छद-च्छ विरशो क-तरुर्बभूव ।

सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग,  
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥24॥

भामण्डल दैदीप्यमान शुभ, सुर तरु की छवि लुप्त करे ।  
स्वयं अचेतन होकर भी जो, प्रभा दिखाए श्रेष्ठ अरे ॥  
भव्य जीव हे नाथ ! आपकी, स्वयं निकटता में आवे ।  
वीतराग हो भव्य जीव वह, मोक्ष निकेतन को पावे ॥24॥

ॐ ह्रीं भामण्डल मण्डिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान सरोवर में अवगाहन, से होता है धर्मध्यान ।  
किया गया सोलह काव्यों से, पार्श्वनाथ का शुभ गुणगान ॥

ॐ ह्रीं षोडशदल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(असाध्यरोग शामक)

भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन-  
मागत्य निर्वृति-पुरीं प्रति सार्थवाहम् ।  
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय,  
मन्ये नदन्-नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥25॥

(रोला छन्द)

दुन्दुभि नाद गगन में होवे देवों द्वारा ।  
मानो चिल्लाकर कहता लो चरण सहारा ॥  
मोक्षपुरी जाना चाहो तो प्रभु को ध्याओ ।  
तज प्रमाद हे प्राणी ! तुम भी शिवपद पाओ ॥25॥

ॐ ह्रीं देवदुन्दुभिनादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(वचन सिद्धि प्रतिष्ठापक)

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ,  
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ।



मुक्ता-कलाप-कलितोरु-सितातपत्र-  
व्याजात्रिधा धृत-तनुधुर्वमभ्युपेतः ॥26॥

तीन छत्र त्रिभुवन के नाथ बताने वाले ।  
तारा गण की छवि युक्त हैं श्रेष्ठ निराले ॥  
त्रिविध रूप धारण कर जैसे चाँद दिखावे ।  
होकर भाव विभोर प्रभु सेवा को आवे ॥26॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम  
कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(वैर-विरोध विनाशक)

स्वेन प्रपूरित-जगत्त्रय-पिण्डितेन,  
कान्ति-प्रताप-यशसामिव संचयेन ।  
माणिक्य-हेम-रजत-प्रविनिर्मितेन,  
सालत्रयेण भगवन्-नभितो विभासि ॥27॥

सोना चाँदी माणिक से त्रय कोट बनाए ।  
तीन लोक के पिण्ड सम्पदा युक्त कहाए ॥  
कान्ति कीर्ति व तेज पुंज का वर्तुल गाया ।  
पार्श्व प्रभु का समवशरण जगती पर आया ॥27॥

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम  
कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यशः कीर्तिप्रसारक)

दिव्य-स्रजो जिन नमस्त्रिदशाधिपाना-  
मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान् ।  
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वापरत्र,  
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव ॥28॥



इन्द्रों के मुकुटों की दिव्य सुमन मालाएँ ।  
नमस्कार के समय चरण में जो गिर जाएँ ॥  
मानो वह तब चरणों में शुभ जगह बनाएँ ।  
पाद पद्म को छोड़ और अब कहीं न जाएँ ॥28॥

ॐ ह्रीं भक्तजनानवनपतिराय महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम  
कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(आकर्षण कारक)

त्वं नाथ जन्म-जलधेर्विपराद्मुखोऽपि,  
यत्तारयस्यसुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान् ।  
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव,  
चित्रं विभो यदसि कर्म-विपाक-शून्यः ॥29॥

हुआ अधोमुख पक्व घड़ा सागर में जावे ।  
गहन जलाशय से मानव को पार करावे ॥  
भव सिंधू से हुए विमुख है संत निराले ।  
भव्यों को भव तारक अतिशय महिमा वाले ॥29॥

ॐ ह्रीं जिनपृष्ठलग्न भयतारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय  
नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(असंभव कार्यसाधक)

विश्वेश्वरोऽपि जन-पालक दुर्गतस्त्वं,  
किं वाऽक्षर-प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश !  
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,  
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकास-हेतुः ॥30॥

तीन लोक के नाथ आप निर्धन कहलाए ।  
तीन काल के ज्ञाता हो अज्ञानी गाए ॥  
तुम अक्षर स्वभावी कोई लिख न पाए ।  
सर्व चराचर के ज्ञाता प्रभु आप कहाए ॥30॥



ॐ ह्रीं विस्मयनीयमूर्तये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(शुभाशुभ प्रश्नदर्शक)

प्राग्भार-संभृत-नभांसि रजांसि रोषा-  
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ।  
छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो,  
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥३१॥

कुपित कमठ ने नभ मण्डल में धूल गिराई ।  
तव तन की छाया को भी वह छू न पाई ॥  
तिरस्कार की दृष्टि से जो कार्य कराया ।  
विफल मनोरथ हुआ कर्म का बन्धन पाया ॥३१॥

ॐ ह्रीं कमठोत्थापितधूल्युपधरवताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दुष्टता प्रतिरोधी)

यद्गर्जदूर्जित - घनौघमदभ्र - भीम -  
भ्रश्यत्तडिन्-मुसल-मांसल-घोरधारम् ।  
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर-वारि दधे,  
तेनैव तस्य जिन दुस्तर-वारि कृत्यम् ॥३२॥

गरजे मेघ चमकती बिजली खूब दिखाई ।  
जल की वृष्टि महा भयंकर वहाँ कराई ॥  
फिर भी पार्श्व प्रभु का वह कुछ न कर पाया ।  
अपने हाथों निज पद मानो खड़ग चलाया ॥३२॥

ॐ ह्रीं कमठकृतजलधारोपसर्गनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



(उल्कापातातिवृष्ट्यनावृष्टि निरोधक)

ध्वस्तोर्ध्व-केश-विकृताकृति-मर्त्य-मुण्ड-  
प्रालम्बभृद्-भयदवक्त्र-विनिर्यदग्निः ।  
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः,  
सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भव-दुःख हेतुः ॥३३॥

महा भयानक नर मुण्डन की धारी माला ।  
और वदन से निकल रही थी अग्नी ज्वाला ॥  
भंग तपस्या करने भूत-प्रेत दौड़ाए ।  
प्रभु का कुछ न बिगड़ा कर्म का बन्ध उपाए ॥३३॥

ॐ ह्रीं कमठकृत पैशाचिकोपद्रव जयशीलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(भूत-पिशाच पीड़ा तथा शत्रुभय नाशक)

धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य-  
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य-कृत्याः ।  
भक्त्योल्लसत्पुलक-पक्ष्मल-देह-देशाः,  
पाद-द्वयं तव-विभो भुवि जन्मभाजः ॥३४॥

पुलकित होकर चरण शरण प्रभु का पा जाते ।  
तजकर माया जाल तीन कालों में आते ॥  
विधिवत् करें अर्चना हे जगतीपति तेरी ।  
होगा जीवन धन्य मिटे भव-भव की फेरी ॥३४॥

ॐ ह्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(मृगी उन्माद अपस्मार विनाशक)

अस्मिन्नपार-भव-वारि-निधौ मुनीश !  
मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि ।



अकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मन्त्रे,  
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥35॥

(शम्भू छंद)

हे मुनीन्द्र ! हम कई जन्मों से, दुःख उठाते आए हैं।  
कानों से हम नाम आपका, फिर भी न सुन पाए हैं॥  
मंत्रोच्चार पूर्वक स्वामी, सुने आपका जो भी नाम।  
विपदा रूपी नागिन से वह, पा लेते क्षण में विश्राम ॥35॥

ॐ ह्रीं पवित्रनामधेयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सर्प वशीकरण)

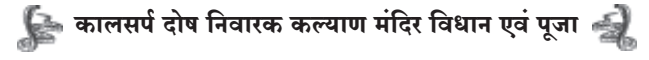
जन्मान्तरेऽपि तव पाद-युगं न देव,  
मन्ये मया महितमीहित-दान-दक्षम्।  
तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां,  
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥36॥

चरण कमल में नाथ आपके, कई जन्मों से ना आए।  
मनवांछित फल देने वाले, पूजा तव न कर पाए॥  
इसीलिए इस जग के प्राणी, करते हिय भेदी अपमान।  
शरण आपकी पाई मैंने, पाँगे हम फिर सम्मान ॥36॥

ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनर्थ नाशक दर्शन)

नूनं न मोह-तिमिरावृतलोचनेन,  
पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।  
मर्मा विभो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,  
प्रोद्यत्प्रबन्ध-गतयः कथमन्यथैते ॥37॥



मोह महातम से आच्छादित, खोल सके न ज्ञान नयन।  
निश्चय पूर्वक एक बार भी, किए आपके न दर्शन॥  
दुःख मर्म भेदी हे स्वामी !, इसीलिए बहु सता रहे।  
किये दर्श न पूर्व जन्म में, अतः कर्म के घात सहे ॥37॥

ॐ ह्रीं दर्शनीय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(असंख्यकष्ट निवारक)

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,  
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।  
जातोऽस्मि तेन जन-बान्धव दुःखपात्रं,  
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भाव-शून्याः ॥38॥

प्रभु आपके चरणों की हम, दर्शन पूजन को आए।  
यह निश्चय प्रभु नहीं आपको, हृदय में धारण कर पाए॥  
भाव शून्य भक्ति करने से, हमने भारी दुख सहे।  
क्रिया भाव से रहित लोक में, फलदायी न कभी रहे ॥38॥

ॐ ह्रीं भक्तिहीनजनमाध्यस्थाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सर्वज्वर शामक)

त्वं नाथ दुःखि-जन-वत्सल हे शरण्य,  
कारुण्य-पुण्य-वसते वशिनां वरेण्यः।  
भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय,  
दुःखांकरोद्दलन-तत्परतां विधेहि ॥39॥

नाथ दुखी जन के वत्सल हे !, शरणागत को एक शरण।  
करुणाकर हे इन्द्रिय जेता, योगीश्वर तव दाय चरण॥  
हे महेश ! हम भक्ती पूर्वक, झुका रहे हैं पद में शीश।  
दूर करो मेरे दुख सारे, यही प्रार्थना दो आशीष ॥39॥

ॐ ह्रीं भक्तजनवत्सलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(विषम ज्वर विघातक)

निःसख्य-सार-शरणं शरणं शरण्य-  
मासाद्य सादित-रिपु प्रथितावदानम् ।  
त्वत्पाद-पंकजमपि प्रणिधान-वन्ध्यो,  
वन्ध्योऽस्मि चेद्भुवन पावन हा हतोऽस्मि ॥40॥

अशरण शरण शरण प्रतिपालक, जगतपति जगती के ईश ।  
गुण अनन्त के धारी भगवन, कर्म विजेता हे जगदीश ॥  
तव पद पंकज में रहकर भी, ध्यान से हम प्रभु रहित रहे ।  
इसीलिए हे प्रभुवर हमने, कर्मों के घनघात सहे ॥40॥

ॐ ह्रीं सौभाग्यदायकपदकमलयुगाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(अस्त्र-शस्त्र विघातक)

देवेन्द्र-वन्द्य विदिताखिल-वस्तुसार !  
संसार-तारक विभो भुवनाधिनाथ ।  
त्रायस्व देव करुणा-हृद मां पुनीहि,  
सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बु-राशेः ॥41॥

अखिल विश्व के ज्ञाता दृष्टा, वन्दनीय इन्द्रों से नाथ ।  
भव तारक हे प्रभु ! आप हो, करुणाकर त्रैलोकी नाथ ॥  
करुणा सागर हे जिनेन्द्र ! प्रभु, दुखिया का उद्धार करो ।  
महा भयानक दुख सागर से, मुझको भी प्रभु पार करो ॥41॥

ॐ ह्रीं सर्वपदार्थवेदिने क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(स्त्री सम्बन्धि समस्त रोग शामक)

यद्यस्ति नाथ भवदङ्घ्रि-सरोरुहाणां,  
भक्तेः फलं किमपि सन्तत-सञ्चितायाः ।  
तन्मे त्वदेक-शरणस्य शरण्य भूयाः  
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥42॥

हे शरणागत के प्रतिपालक, शरण आपकी हम आए ।  
किञ्चित पुण्य कमाया हमने, भक्ति चरण की जो पाए ॥  
यही चाहते हम भव-भव में, स्वामी मेरे आप रहो ।  
हम बन सकें आपके जैसे, बनो मेरे आदर्श अहो ॥42॥

ॐ ह्रीं पुण्यबहुजनसेव्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(बन्धन मोचक)

इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र !  
सान्द्रोल्लसत्पुलक-कञ्चुकितांगभागाः ।  
त्वदबिम्ब-निर्मल-मुखाम्बुज-बद्ध-लक्ष्या,  
ये संस्तवं तव विभो रचयन्ति भव्याः ॥43॥

हे जिनेन्द्र ! सावधान बुद्धि से, भव्य पुरुष जो भी आते ।  
रोमांचित हो मुख अम्बुज के, लक्ष्य बना दर्शन पाते ॥  
विधि पूर्वक संस्तव रचना, करते हैं जो भव्य महान ।  
स्वर्गों के सुख पाने वाले, अतिशीघ्र पाते निर्वाण ॥43॥

ॐ ह्रीं जन्ममृत्युनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(आर्या छन्द)

जन नयन-‘कुमुदचन्द्र’-प्रभास्वराः स्वर्ग-संपदो भुक्त्वा ।  
ते विगलित-मल-निचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥44॥





जन-जन के शुभ नयन कमल को, विकसाने वाले चन्द्रेण ।  
स्वर्ग सम्पदा पाने हेतू, करते सहसा स्वर्ग प्रवेश ॥  
किञ्चित् काल भोग करके नर, मानव गति में आते हैं ।  
कर्म शृंखला शीघ्र नाशकर, मोक्ष निकेतन पाते हैं ॥४४॥

ॐ ह्रीं कुमुदचन्द्रयतिसेवितपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय  
नमः मम कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

### त्रिभंगी छंद

जय-जय जगनायक, सौख्य प्रदायक, मुक्तिदायक हितकारी ।  
कर्मों के क्षायक, ज्ञान प्रदायक, पार्श्वनाथ मंगलकारी ॥  
ॐ ह्रीं विंशति दलकमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।  
जाप- ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ।

### समुच्चय जयमाला

दोहा- पार्श्वनाथ के चरण में, वन्दन करूँ त्रिकाल ।  
कल्याण मन्दिर स्तोत्र की, गाता हूँ जयमाल ॥

### (चौपाई)

लोकालोक अनन्तानन्त, कहते केवल ज्ञानी संत ।  
चौदह राजू लोक महान्, ऊँचा सप्त राजू पहिचान ॥  
राजू एक मध्य विस्तार, मध्य सुमेरु अपरम्पार ।  
दक्षिण दिशा रही मनहार, भरत क्षेत्र है मंगलकार ॥  
आर्य खण्ड में भारत देश, जिसमें भाई रहा विशेष ।  
उज्जैनी नगरी में जान, विक्रम राजा रहे महान् ॥  
उसी नगर में भक्त प्रधान, गंगा में करने स्नान ।  
वृद्ध महर्षि आए एक, जिनमें गुण थे श्रेष्ठ अनेक ॥  
योग्य भक्त की रही तलाश, देख भक्त को जागी आश ।  
श्रेष्ठ वदन था कान्तीमान, सुन्दर दिखता आलीशान ॥



धक्का उसे लगाया जोर, वाद-विवाद हुआ फिर घोर ।  
शिष्य बने जिसकी हो हार, शर्त रखी यह अपरम्पार ॥  
ग्वाल बाल निकला तब एक, निर्णायक माना वह नेक ।  
कई श्लोक सुनाए श्रेष्ठ, आगम वर्णित रहे यथेष्ट ॥  
ग्वाला उससे था अनभिज्ञ, श्रेष्ठ महर्षि अनुपम विज्ञ ।  
वह दृष्टांत सुनाए नेक, ग्वाला मुग्ध हुआ यह देख ॥  
भक्त ने गुरु को किया प्रणाम, कुमुद चन्द रक्खा तब नाम ।  
क्षपणक जिनका था उपनाम, जिन भक्ति था उनका काम ॥  
आप गये चित्तौड़ प्रदेश, दर्श पार्श्व के हुए विशेष ।  
था स्तंभ वहाँ पर एक, उसमें थे संकेत अनेक ॥  
उस कुटीर का खोला द्वार, शास्त्र मिला जिसमें मनहार ।  
एक पृष्ठ पढ़ने के बाद, बन्द हुआ फिर शीघ्र कपाट ॥  
अदृश वाणी हुई विशेष, भाग्य नहीं पढ़ने का शेष ।  
एक बार यौगिक ने आन, चमत्कार दिखलाए महान् ॥  
क्षपणक को वह माने हीन, बने आप थे ज्ञान प्रवीण ।  
चमत्कार दिखलाओ यथेष्ट, तब मानेंगे तुमको श्रेष्ठ ॥  
स्वीकारा क्षण में आह्वान, भक्ति करने लगे महान् ।  
महाकालेश्वर के स्थान, किया कपिल ने यह ऐलान ॥  
भूप ने कीन्हा यही कथन, क्षपणक शिव को करो नमन् ।  
कुमुदचन्द आचार्य मुनीश, देख झुकाएँ अपना शीश ॥  
गढ़ चित्तौड़ के वही महान्, दिखने लगे पार्श्व भगवान ।  
देखा वही श्रेष्ठ स्तंभ, भरा हुआ लोगों का दम्भ ॥  
“आकर्णितोऽपि” आदी यह श्रेष्ठ, गुरु ने बोला काव्य यथेष्ट ।  
तेजोमय शुभ आभावान, प्रगटे पार्श्वनाथ भगवान ॥  
लोग किए तब बारम्बार, जैनाचार्य की जय-जयकार ।  
जैन धर्म कीन्हा स्वीकार, लोगों ने मुनिवर के द्वार ॥

कल्याण मन्दिर यह स्तोत्र, मिला धर्म का अनुपम स्रोत ।  
करने हम आतम कल्याण, अर्घ्य चढ़ाते प्रभुपद आन ॥

(घटानन्द छन्द)

जय-जय जिन त्राता मुक्तिदाता, पार्श्वनाथ जिनवर वन्दन ।

जय मोक्ष प्रदाता भाग्य विधाता, तव चरणों में करूँ नमन ॥

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ  
जिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा- पुष्पाञ्जलि यह नाथ, करते हैं इस भाव से ।

‘विशद’ झुकाऊँ माथ, कल्याण मन्दिर स्तोत्र को ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

अथ श्रीमदादि शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

- |                                    |                                     |
|------------------------------------|-------------------------------------|
| 1 ॐ ह्रीं श्री श्रीमते नमः         | 2 ॐ ह्रीं श्री स्वयंभुवे नमः        |
| 3 ॐ ह्रीं श्री वृषभाय नमः          | 4 ॐ ह्रीं श्री शंभवाय नमः           |
| 5 ॐ ह्रीं श्री शंभवे नमः           | 6 ॐ ह्रीं श्री आत्मभुवे नमः         |
| 7 ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभाय नमः     | 8 ॐ ह्रीं श्री प्रभवे नमः           |
| 9 ॐ ह्रीं श्री भोक्त्रे नमः        | 10 ॐ ह्रीं श्री विश्वभुवे नमः       |
| 11 ॐ ह्रीं श्री अपुनर्भवाय नमः     | 12 ॐ ह्रीं श्री विश्वात्मानाय नमः   |
| 13 ॐ ह्रीं श्री विश्वलोकेशाय नमः   | 14 ॐ ह्रीं श्री विश्वतश्चक्षुषे नमः |
| 15 ॐ ह्रीं श्री अक्षराय नमः        | 16 ॐ ह्रीं श्री विश्वविदे नमः       |
| 17 ॐ ह्रीं श्री विश्वविद्येशाय नमः | 18 ॐ ह्रीं श्री विश्वयोनये नमः      |
| 19 ॐ ह्रीं श्री अनश्वराय नमः       | 20 ॐ ह्रीं श्री विश्वदृश्वने नमः    |
| 21 ॐ ह्रीं श्री विभवे नमः          | 22 ॐ ह्रीं श्री धात्रे नमः          |
| 23 ॐ ह्रीं श्री विश्वेशाय नमः      | 24 ॐ ह्रीं श्री विश्वलोचनाय नमः     |
| 25 ॐ ह्रीं श्री विश्वव्यापिने नमः  | 26 ॐ ह्रीं श्री विद्यवे नमः         |
| 27 ॐ ह्रीं श्री वेधसे नमः          | 28 ॐ ह्रीं श्री शाश्वताय नमः        |
| 29 ॐ ह्रीं श्री विश्वतोमुखाय नमः   | 30 ॐ ह्रीं श्री विश्वकर्मणे नमः     |
| 31 ॐ ह्रीं श्री जगज्येष्ठाय नमः    | 32 ॐ ह्रीं श्री विश्वमूर्तये नमः    |
| 33 ॐ ह्रीं श्री जिनेश्वराय नमः     | 34 ॐ ह्रीं श्री विश्वदृशे नमः       |
| 35 ॐ ह्रीं श्री विश्वभूतेशाय नमः   | 36 ॐ ह्रीं श्री विश्वज्योतिषे नमः   |
| 37 ॐ ह्रीं श्री अनीश्वराय नमः      | 38 ॐ ह्रीं श्री जिनाय नमः           |

- |                                     |   |
|-------------------------------------|---|
| 39 ॐ ह्रीं श्री जिष्णवे नमः         | 40 ॐ ह्रीं श्री अमेयात्मने नमः          |
| 41 ॐ ह्रीं श्री विश्वरीशाय नमः      | 42 ॐ ह्रीं श्री जगत्पतये नमः            |
| 43 ॐ ह्रीं श्री अनन्तजिते नमः       | 44 ॐ ह्रीं श्री अचिन्त्यात्मने नमः      |
| 45 ॐ ह्रीं श्री भव्यबंधवे नमः       | 46 ॐ ह्रीं श्री अबंधनाय नमः             |
| 47 ॐ ह्रीं श्री युगादिपुरुषाय नमः   | 48 ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मणे नमः            |
| 49 ॐ ह्रीं श्री पञ्चब्रह्मयाय नमः   | 50 ॐ ह्रीं श्री शिवाय नमः               |
| 51 ॐ ह्रीं श्री पराय नमः            | 52 ॐ ह्रीं श्री परतराय नमः              |
| 53 ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्माय नमः       | 54 ॐ ह्रीं श्री परमेष्ठिने नमः          |
| 55 ॐ ह्रीं श्री सनातनाय नमः         | 56 ॐ ह्रीं श्री स्वयंज्योतिषे नमः       |
| 57 ॐ ह्रीं श्री अजाय नमः            | 58 ॐ ह्रीं श्री अजन्मने नमः             |
| 59 ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मयोनये नमः     | 60 ॐ ह्रीं श्री अयोनिजाय नमः            |
| 61 ॐ ह्रीं श्री मोहारिविजयने नमः    | 62 ॐ ह्रीं श्री मोहमल्लजेताय नमः        |
| 63 ॐ ह्रीं श्री धर्मचक्रिणे नमः     | 64 ॐ ह्रीं श्री दयाध्वजाय नमः           |
| 65 ॐ ह्रीं श्री प्रशांतारये नमः     | 66 ॐ ह्रीं श्री अनन्तात्मने नमः         |
| 67 ॐ ह्रीं श्री योगिने नमः          | 68 ॐ ह्रीं श्री योगीश्वरार्चिताय नमः    |
| 69 ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मविदे नमः      | 70 ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मतत्त्वज्ञाय नमः   |
| 71 ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मोद्याविदे नमः | 72 ॐ ह्रीं श्री यतीश्वराय नमः           |
| 73 ॐ ह्रीं श्री शुद्धाय नमः         | 74 ॐ ह्रीं श्री बुद्धाय नमः             |
| 75 ॐ ह्रीं श्री प्रबुद्धात्मने नमः  | 76 ॐ ह्रीं श्री सिद्धार्थाय नमः         |
| 77 ॐ ह्रीं श्री सिद्धशासनाय नमः     | 78 ॐ ह्रीं श्री सिद्धाय नमः             |
| 79 ॐ ह्रीं श्री सिद्धान्तविदे नमः   | 80 ॐ ह्रीं श्री ध्येयाय नमः             |
| 81 ॐ ह्रीं श्री सिद्धसाध्याय नमः    | 82 ॐ ह्रीं श्री जगद्धिताय नमः           |
| 83 ॐ ह्रीं श्री सहिष्णवे नमः        | 84 ॐ ह्रीं श्री अच्युताय नमः            |
| 85 ॐ ह्रीं श्री अनन्ताय नमः         | 86 ॐ ह्रीं श्री प्रभविष्णवे नमः         |
| 87 ॐ ह्रीं श्री भवोद्भवाय नमः       | 88 ॐ ह्रीं श्री प्रभुष्णवे नमः          |
| 89 ॐ ह्रीं श्री अजराय नमः           | 90 ॐ ह्रीं श्री अजर्याय नमः             |
| 91 ॐ ह्रीं श्री भ्राजिष्णवे नमः     | 92 ॐ ह्रीं श्री धीश्वराय नमः            |
| 93 ॐ ह्रीं श्री अव्ययाय नमः         | 94 ॐ ह्रीं श्री विभावसवे नमः            |
| 95 ॐ ह्रीं श्री असम्भूष्णवे नमः     | 96 ॐ ह्रीं श्री स्वयंभूष्णवे नमः        |
| 97 ॐ ह्रीं श्री पुरातनाय नमः        | 98 ॐ ह्रीं श्री परमात्मने नमः           |
| 99 ॐ ह्रीं श्री परमज्योतिषे नमः     | 100 ॐ ह्रीं श्री त्रिजगत्परमेश्वराय नमः |

दोहा- श्रीमत् आदि नाम शत, शोभित रहे महान् ।

धर्म तीर्थ कर्ता विभो, अर्चा करूँ प्रधान ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामावलिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ दिव्य भाषापत्यादि शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

- |                                      |                                   |
|--------------------------------------|-----------------------------------|
| 1 ॐ ह्रीं श्री दिव्यभाषापतये नमः     | 2 ॐ ह्रीं श्री दिव्याय नमः        |
| 3 ॐ ह्रीं श्री पूतवाचे नमः           | 4 ॐ ह्रीं श्री पूतशासनाय नमः      |
| 5 ॐ ह्रीं श्री पूतात्मने नमः         | 6 ॐ ह्रीं श्री परमज्योतिषे नमः    |
| 7 ॐ ह्रीं श्री धर्माध्यक्षाय नमः     | 8 ॐ ह्रीं श्री दमीश्वराय नमः      |
| 9 ॐ ह्रीं श्री श्रीपतये नमः          | 10 ॐ ह्रीं श्री भगवते नमः         |
| 11 ॐ ह्रीं श्री अर्हते नमः           | 12 ॐ ह्रीं श्री अरजसे नमः         |
| 13 ॐ ह्रीं श्री विरजसे नमः           | 14 ॐ ह्रीं श्री शुचये नमः         |
| 15 ॐ ह्रीं श्री तीर्थकृते नमः        | 16 ॐ ह्रीं श्री केवलिनै नमः       |
| 17 ॐ ह्रीं श्री ईशानाय नमः           | 18 ॐ ह्रीं श्री पूजार्हाय नमः     |
| 19 ॐ ह्रीं श्री स्नातकाय नमः         | 20 ॐ ह्रीं श्री अमलाय नमः         |
| 21 ॐ ह्रीं श्री अनंतदीप्तये नमः      | 22 ॐ ह्रीं श्री ज्ञानात्मने नमः   |
| 23 ॐ ह्रीं श्री स्वयंबुद्धाय नमः     | 24 ॐ ह्रीं श्री प्रजापतये नमः     |
| 25 ॐ ह्रीं श्री मुक्ताय नमः          | 26 ॐ ह्रीं श्री शक्ताय नमः        |
| 27 ॐ ह्रीं श्री निराबाधाय नमः        | 28 ॐ ह्रीं श्री निष्कलाय नमः      |
| 29 ॐ ह्रीं श्री भुवनेश्वराय नमः      | 30 ॐ ह्रीं श्री निरंजनाय नमः      |
| 31 ॐ ह्रीं श्री जगत्ज्योतिषे नमः     | 32 ॐ ह्रीं श्री निरुक्तोक्तये नमः |
| 33 ॐ ह्रीं श्री निरामयाय नमः         | 34 ॐ ह्रीं श्री अचलस्थितये नमः    |
| 35 ॐ ह्रीं श्री अक्षोभ्याय नमः       | 36 ॐ ह्रीं श्री कूटस्थाय नमः      |
| 37 ॐ ह्रीं श्री स्थाणवे नमः          | 38 ॐ ह्रीं श्री अक्षयाय नमः       |
| 39 ॐ ह्रीं श्री अग्रण्ये नमः         | 40 ॐ ह्रीं श्री ग्रामण्ये नमः     |
| 41 ॐ ह्रीं श्री नेत्रे नमः           | 42 ॐ ह्रीं श्री प्रणेत्रे नमः     |
| 43 ॐ ह्रीं श्री न्यायशास्त्रविदे नमः | 44 ॐ ह्रीं श्री शास्त्रे नमः      |
| 45 ॐ ह्रीं श्री धर्मपतये नमः         | 46 ॐ ह्रीं श्री धर्म्याय नमः      |
| 47 ॐ ह्रीं श्री धर्मात्मने नमः       | 48 ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थकृते नमः |
| 49 ॐ ह्रीं श्री वृषध्वजाय नमः        | 50 ॐ ह्रीं श्री वृषाधीश नमः       |
| 51 ॐ ह्रीं श्री वृषकेतवे नमः         | 52 ॐ ह्रीं श्री वृषायुधाय नमः     |
| 53 ॐ ह्रीं श्री वृषाय नमः            | 54 ॐ ह्रीं श्री वृषपतये नमः       |
| 55 ॐ ह्रीं श्री भर्त्रे नमः          | 56 ॐ ह्रीं श्री वृषभांकाय नमः     |
| 57 ॐ ह्रीं श्री वृषोद्भवाय नमः       | 58 ॐ ह्रीं श्री हिरण्यनाभये नमः   |
| 59 ॐ ह्रीं श्री भूतात्मने नमः        | 60 ॐ ह्रीं श्री भूभूते नमः        |
| 61 ॐ ह्रीं श्री भूतभावनाय नमः        | 62 ॐ ह्रीं श्री प्रभवाय नमः       |
| 63 ॐ ह्रीं श्री विभवाय नमः           | 64 ॐ ह्रीं श्री भास्वते नमः       |
| 65 ॐ ह्रीं श्री भवाय नमः             | 66 ॐ ह्रीं श्री भावाय नमः         |

- |  |   |
|--|---|
| 67 ॐ ह्रीं श्री भवान्तकाय नमः          | 68 ॐ ह्रीं श्री हिरण्यगर्भाय नमः          |
| 69 ॐ ह्रीं श्री श्रीगर्भाय नमः         | 70 ॐ ह्रीं श्री प्रभूतविभवाय नमः          |
| 71 ॐ ह्रीं श्री अभवाय नमः              | 72 ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभवे नमः           |
| 73 ॐ ह्रीं श्री प्रभूतात्मने नमः       | 74 ॐ ह्रीं श्री भूतनाथाय नमः              |
| 75 ॐ ह्रीं श्री जगत्प्रभवे नमः         | 76 ॐ ह्रीं श्री सर्वादये नमः              |
| 77 ॐ ह्रीं श्री सर्वदृशे नमः           | 78 ॐ ह्रीं श्री सार्वाय नमः               |
| 79 ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञाय नमः          | 80 ॐ ह्रीं श्री सर्वदर्शनाय नमः           |
| 81 ॐ ह्रीं श्री सर्वात्मने नमः         | 82 ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकेशाय नमः           |
| 83 ॐ ह्रीं श्री सर्वविदे नमः           | 84 ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकजिते नमः           |
| 85 ॐ ह्रीं श्री सुगतये नमः             | 86 ॐ ह्रीं श्री सुश्रुताय नमः             |
| 87 ॐ ह्रीं श्री सुश्रुते नमः           | 88 ॐ ह्रीं श्री सुवाचे नमः                |
| 89 ॐ ह्रीं श्री सूरये नमः              | 90 ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुताय नमः            |
| 91 ॐ ह्रीं श्री विश्रुताय नमः          | 92 ॐ ह्रीं श्री विश्वतःपादाय नमः          |
| 93 ॐ ह्रीं श्री विश्वशीर्षाय नमः       | 94 ॐ ह्रीं श्री शुचिश्रवसे नमः            |
| 95 ॐ ह्रीं श्री सहस्रशीर्षाय नमः       | 96 ॐ ह्रीं श्री क्षेत्रज्ञाय नमः          |
| 97 ॐ ह्रीं श्री सहस्राक्षाय नमः        | 98 ॐ ह्रीं श्री सहस्रपदे नमः              |
| 99 ॐ ह्रीं श्री भूतभव्यभवद्भर्त्रे नमः | 100 ॐ ह्रीं श्री विश्वविद्यामहेश्वराय नमः |

दोहा- प्रथम दिव्य भाषापति, आदि जिनके नाम ।

अष्ट द्रव्य से पूजकर, नाभिज करूँ प्रणाम ॥2॥

ॐ ह्रीं दिव्यभाषापत्यादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ स्थविष्ठादि शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

- |                                    |                                |
|------------------------------------|--------------------------------|
| 1 ॐ ह्रीं श्री स्थविष्ठाय नमः      | 2 ॐ ह्रीं श्री स्थविराय नमः    |
| 3 ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठाय नमः       | 4 ॐ ह्रीं श्री प्रष्ठाय नमः    |
| 5 ॐ ह्रीं श्री प्रेष्ठाय नमः       | 6 ॐ ह्रीं श्री वरिष्ठधिये नमः  |
| 7 ॐ ह्रीं श्री स्थेष्ठाय नमः       | 8 ॐ ह्रीं श्री गरिष्ठाय नमः    |
| 9 ॐ ह्रीं श्री बंहिष्ठाय नमः       | 10 ॐ ह्रीं श्री श्रेष्ठाय नमः  |
| 11 ॐ ह्रीं श्री अणिष्ठाय नमः       | 12 ॐ ह्रीं श्री गरिष्ठगिरे नमः |
| 13 ॐ ह्रीं श्री विश्वभूषे नमः      | 14 ॐ ह्रीं श्री विश्वसृजे नमः  |
| 15 ॐ ह्रीं श्री विश्वेशे नमः       | 16 ॐ ह्रीं श्री विश्वभुजे नमः  |
| 17 ॐ ह्रीं श्री विश्वनायकाय नमः    | 18 ॐ ह्रीं श्री विश्वासिने नमः |
| 19 ॐ ह्रीं श्री विश्वरूपात्मने नमः | 20 ॐ ह्रीं श्री विश्वजिते नमः  |
| 21 ॐ ह्रीं श्री विजितांतकाय नमः    | 22 ॐ ह्रीं श्री विभवाय नमः     |
| 23 ॐ ह्रीं श्री विभयाय नमः         | 24 ॐ ह्रीं श्री वीराय नमः      |
| 25 ॐ ह्रीं श्री विशोकाय नमः        | 26 ॐ ह्रीं श्री विजराय नमः     |

- 27 ॐ ह्रीं श्री अजरते नमः  
 29 ॐ ह्रीं श्री विरताय नमः  
 31 ॐ ह्रीं श्री विविक्ताय नमः  
 33 ॐ ह्रीं श्री विनेयजनताबंधवे नमः  
 35 ॐ ह्रीं श्री विद्योगाय नमः  
 37 ॐ ह्रीं श्री विदुषे नमः  
 39 ॐ ह्रीं श्री सुविधये नमः  
 41 ॐ ह्रीं श्री क्षांतिभाजे नमः  
 43 ॐ ह्रीं श्री शांतिभाजे नमः  
 45 ॐ ह्रीं श्री वायुमूर्तये नमः  
 47 ॐ ह्रीं श्री वह्निमूर्तये नमः  
 49 ॐ ह्रीं श्री सुयज्वने नमः  
 51 ॐ ह्रीं श्री सुत्वे नमः  
 53 ॐ ह्रीं श्री ऋत्विजे नमः  
 55 ॐ ह्रीं श्री याज्याय नमः  
 57 ॐ ह्रीं श्री अमृताय नमः  
 59 ॐ ह्रीं श्री व्योममूर्तये नमः  
 61 ॐ ह्रीं श्री निर्लेपाय नमः  
 63 ॐ ह्रीं श्री अचलाय नमः  
 65 ॐ ह्रीं श्री सुसौम्यात्मने नमः  
 67 ॐ ह्रीं श्री महाप्रभाय नमः  
 69 ॐ ह्रीं श्री मंत्रकृते नमः  
 71 ॐ ह्रीं श्री मंत्रमूर्तये नमः  
 73 ॐ ह्रीं श्री तंत्रकृते नमः  
 75 ॐ ह्रीं श्री कृतान्तान्ताय नमः  
 77 ॐ ह्रीं श्री कृतिने नमः  
 79 ॐ ह्रीं श्री सत्कृत्याय नमः  
 81 ॐ ह्रीं श्री कृतकृतवे नमः  
 83 ॐ ह्रीं श्री मृत्युञ्जयाय नमः  
 85 ॐ ह्रीं श्री अमृतात्मने नमः  
 87 ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मनिष्ठाय नमः  
 89 ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मात्मने नमः  
 91 ॐ ह्रीं श्री महाब्रह्मपतये नमः  
 93 ॐ ह्रीं श्री महाब्रह्मपदेश्वराय नमः  
 28 ॐ ह्रीं श्री विरागाय नमः  
 30 ॐ ह्रीं श्री असंगाय नमः  
 32 ॐ ह्रीं श्री वीतमत्सराय नमः  
 34 ॐ ह्रीं श्री विलीनाशेषकल्मषाय नमः  
 36 ॐ ह्रीं श्री योगविदे नमः  
 38 ॐ ह्रीं श्री विधात्रे नमः  
 40 ॐ ह्रीं श्री सुधिये नमः  
 42 ॐ ह्रीं श्री पृथ्वीमूर्तये नमः  
 44 ॐ ह्रीं श्री सलिलात्मकाय नमः  
 46 ॐ ह्रीं श्री असंगात्मने नमः  
 48 ॐ ह्रीं श्री अधर्मदहे नमः  
 50 ॐ ह्रीं श्री यजमानात्मने नमः  
 52 ॐ ह्रीं श्री सुत्रामपूजिताय नमः  
 54 ॐ ह्रीं श्री यज्ञपतये नमः  
 56 ॐ ह्रीं श्री यज्ञांगाय नमः  
 58 ॐ ह्रीं श्री हविषे नमः  
 60 ॐ ह्रीं श्री अमूर्तात्मने नमः  
 62 ॐ ह्रीं श्री निर्मलाय नमः  
 64 ॐ ह्रीं श्री सोममूर्तये नमः  
 66 ॐ ह्रीं श्री सूर्यमूर्तये नमः  
 68 ॐ ह्रीं श्री मंत्रविदे नमः  
 70 ॐ ह्रीं श्री मंत्रिणे नमः  
 72 ॐ ह्रीं श्री स्वतंत्राय नमः  
 74 ॐ ह्रीं श्री स्वन्ताय नमः  
 76 ॐ ह्रीं श्री कृतान्तकृते नमः  
 78 ॐ ह्रीं श्री कृतार्थाय नमः  
 80 ॐ ह्रीं श्री कृतकृत्याय नमः  
 82 ॐ ह्रीं श्री नित्याय नमः  
 84 ॐ ह्रीं श्री अमृत्यवे नमः  
 86 ॐ ह्रीं श्री अमृतोद्भवाय नमः  
 88 ॐ ह्रीं श्री परंब्रह्मणे नमः  
 90 ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मसंभवाय नमः  
 92 ॐ ह्रीं श्री ऋत्विजे ब्रह्मते नमः  
 94 ॐ ह्रीं श्री सुप्रसन्नाय नमः

- 95 ॐ ह्रीं श्री प्रसन्नात्मने नमः  
 97 ॐ ह्रीं श्री प्रशमात्मने नमः  
 99 ॐ ह्रीं श्री पुराणपुरुषोत्तमाय नमः  
 96 ॐ ह्रीं श्री ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः  
 98 ॐ ह्रीं श्री प्रशान्तात्मने नमः  
 100 ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मसंभवाय नमः

दोहा- स्थविष्ठादि नाम शत, नाभि सुत के नाम ।

अष्ट द्रव्य से पूजकर, उनको करूँ प्रणाम ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री स्थविष्ठादिशतनामेभ्यः नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ महाशोकध्वजादि शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

- 1 ॐ ह्रीं श्री महाशोकध्वजाय नमः  
 3 ॐ ह्रीं श्री काय नमः  
 5 ॐ ह्रीं श्री पद्मविष्टराय नमः  
 7 ॐ ह्रीं श्री पद्मसंभूतये नमः  
 9 ॐ ह्रीं श्री अनुत्तराय नमः  
 11 ॐ ह्रीं श्री जगद्योनये नमः  
 13 ॐ ह्रीं श्री स्तुत्याय नमः  
 15 ॐ ह्रीं श्री स्तवनार्हाय नमः  
 17 ॐ ह्रीं श्री जितजेयाय नमः  
 19 ॐ ह्रीं श्री गणाधिपाय नमः  
 21 ॐ ह्रीं श्री गण्याय नमः  
 23 ॐ ह्रीं श्री गुणाग्रण्ये नमः  
 25 ॐ ह्रीं श्री गुणाम्भोधये नमः  
 27 ॐ ह्रीं श्री गुणनायकाय नमः  
 29 ॐ ह्रीं श्री गुणाच्छेदिने नमः  
 31 ॐ ह्रीं श्री पुण्यगिरे नमः  
 33 ॐ ह्रीं श्री शरण्याय नमः  
 35 ॐ ह्रीं श्री पूताय नमः  
 37 ॐ ह्रीं श्री पुण्यनायकाय नमः  
 39 ॐ ह्रीं श्री पुण्यधिये नमः  
 41 ॐ ह्रीं श्री पुण्यकृत नमः  
 43 ॐ ह्रीं श्री धर्मरामाय नमः  
 45 ॐ ह्रीं श्री पुण्यापुण्यनिरोधाय नमः  
 47 ॐ ह्रीं श्री विपापात्मने नमः  
 49 ॐ ह्रीं श्री वीत्कल्मषाय नमः  
 51 ॐ ह्रीं श्री निर्मदाय नमः  
 53 ॐ ह्रीं श्री निर्मोहाय नमः  
 2 ॐ ह्रीं श्री अशोकाय नमः  
 4 ॐ ह्रीं श्री स्रष्ट्रे नमः  
 6 ॐ ह्रीं श्री पद्मेशाय नमः  
 8 ॐ ह्रीं श्री पद्मनाभये नमः  
 10 ॐ ह्रीं श्री पद्मयोनये नमः  
 12 ॐ ह्रीं श्री इत्याय नमः  
 14 ॐ ह्रीं श्री स्तुतीश्वराय नमः  
 16 ॐ ह्रीं श्री हृषीकेशाय नमः  
 18 ॐ ह्रीं श्री कृतक्रियाय नमः  
 20 ॐ ह्रीं श्री गणज्येष्ठाय नमः  
 22 ॐ ह्रीं श्री पुण्याय नमः  
 24 ॐ ह्रीं श्री गुणाकराय नमः  
 26 ॐ ह्रीं श्री गुणज्ञाय नमः  
 28 ॐ ह्रीं श्री गुणादरिणे नमः  
 30 ॐ ह्रीं श्री निर्गुणाय नमः  
 32 ॐ ह्रीं श्री गुणाय नमः  
 34 ॐ ह्रीं श्री पुण्यवाचे नमः  
 36 ॐ ह्रीं श्री वरेण्याय नमः  
 38 ॐ ह्रीं श्री अगण्याय नमः  
 40 ॐ ह्रीं श्री गुण्याय नमः  
 42 ॐ ह्रीं श्री पुण्यशासनाय नमः  
 44 ॐ ह्रीं श्री गुणग्रामाय नमः  
 46 ॐ ह्रीं श्री पापापेताय नमः  
 48 ॐ ह्रीं श्री विपाप्य नमः  
 50 ॐ ह्रीं श्री निर्द्विषाय नमः  
 52 ॐ ह्रीं श्री शांताय नमः  
 54 ॐ ह्रीं श्री निरुपद्रवाय नमः

- |                                 |   |
|---------------------------------|---|
| 55 ॐ ह्रीं श्री निर्निमेषाय नमः | 56 ॐ ह्रीं श्री निराहाराय नमः                     |
| 57 ॐ ह्रीं श्री निष्क्रियाय नमः | 58 ॐ ह्रीं श्री निरुपप्लवाय नमः                   |
| 59 ॐ ह्रीं श्री निष्कलंकाय नमः  | 60 ॐ ह्रीं श्री निरस्तैनसे नमः                    |
| 61 ॐ ह्रीं श्री निर्धूतागसे नमः | 62 ॐ ह्रीं श्री निरास्रवाय नमः                    |
| 63 ॐ ह्रीं श्री विशालाय नमः     | 64 ॐ ह्रीं श्री विपुलज्योतिषे नमः                 |
| 65 ॐ ह्रीं श्री अतुलाय नमः      | 66 ॐ ह्रीं श्री अचिन्त्यवैभवाय नमः                |
| 67 ॐ ह्रीं श्री सुसंवृताय नमः   | 68 ॐ ह्रीं श्री सुगुप्तात्मने नमः                 |
| 69 ॐ ह्रीं श्री सुबुधे नमः      | 70 ॐ ह्रीं श्री सुनयतत्त्ववित् नमः                |
| 71 ॐ ह्रीं श्री एकविधाय नमः     | 72 ॐ ह्रीं श्री महाविधाय नमः                      |
| 73 ॐ ह्रीं श्री मुनये नमः       | 74 ॐ ह्रीं श्री परिवृद्धाय नमः                    |
| 75 ॐ ह्रीं श्री पत्ये नमः       | 76 ॐ ह्रीं श्री धीशाय नमः                         |
| 77 ॐ ह्रीं श्री विद्यानिधये नमः | 78 ॐ ह्रीं श्री साक्षिणे नमः                      |
| 79 ॐ ह्रीं श्री विनेत्रे नमः    | 80 ॐ ह्रीं श्री विहितान्तकाय नमः                  |
| 81 ॐ ह्रीं श्री पित्रे नमः      | 82 ॐ ह्रीं श्री पितामहाय नमः                      |
| 83 ॐ ह्रीं श्री पात्रे नमः      | 84 ॐ ह्रीं श्री पवित्राय नमः                      |
| 85 ॐ ह्रीं श्री पावनाय नमः      | 86 ॐ ह्रीं श्री गतये नमः                          |
| 87 ॐ ह्रीं श्री त्रात्रे नमः    | 88 ॐ ह्रीं श्री भिषग्वराय नमः                     |
| 89 ॐ ह्रीं श्री वर्याय नमः      | 90 ॐ ह्रीं श्री वरदाय नमः                         |
| 91 ॐ ह्रीं श्री परमाय नमः       | 92 ॐ ह्रीं श्री पुंसे नमः                         |
| 93 ॐ ह्रीं श्री कवि नमः         | 94 ॐ ह्रीं श्री पुराणपुरुषाय नमः                  |
| 95 ॐ ह्रीं श्री वर्षीयसे नमः    | 96 ॐ ह्रीं श्री ऋषभाय नमः                         |
| 97 ॐ ह्रीं श्री पुरुवे नमः      | 98 ॐ ह्रीं श्री प्रतिष्ठाप्रभवाय <sup>1</sup> नमः |
| 99 ॐ ह्रीं श्री हेतवे नमः       | 100 ॐ ह्रीं श्री भुवनैकपितामहाय नमः               |

दोहा- महाशोक ध्वज आदि शत्, शोभित होते नाम ।

अष्ट द्रव्य से पूजकर, उनको करूँ प्रणाम ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री महाशोकध्वजादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

- |                                  |                                   |
|----------------------------------|-----------------------------------|
| 1 ॐ ह्रीं श्री श्रीवृक्षलगाय नमः | 2 ॐ ह्रीं श्री श्लक्ष्णाय नमः     |
| 3 ॐ ह्रीं श्री लक्ष्णाय नमः      | 4 ॐ ह्रीं श्री शुभलक्ष्णाय नमः    |
| 5 ॐ ह्रीं श्री निरक्षाय नमः      | 6 ॐ ह्रीं श्री पुण्डरीकाक्षाय नमः |
| 7 ॐ ह्रीं श्री पुष्कलाय नमः      | 8 ॐ ह्रीं श्री पुष्करेक्षाय नमः   |
| 9 ॐ ह्रीं श्री सिद्धिदाय नमः     | 10 ॐ ह्रीं श्री सिद्धसंकल्पाय नमः |
| 11 ॐ ह्रीं श्री सिद्धात्मने नमः  | 12 ॐ ह्रीं श्री सिद्धसाधनाय नमः   |
| 13 ॐ ह्रीं श्री बुद्धबोध्याय नमः | 14 ॐ ह्रीं श्री महाबोधये नमः      |

- |                                     |  |
|-------------------------------------|--|
| 15 ॐ ह्रीं श्री वर्धमानाय नमः       | 16 ॐ ह्रीं श्री महर्दिकाय नमः          |
| 17 ॐ ह्रीं श्री वेदांगाय नमः        | 18 ॐ ह्रीं श्री वेदविदे नमः            |
| 19 ॐ ह्रीं श्री वेद्याय नमः         | 20 ॐ ह्रीं श्री जातरूपाय नमः           |
| 21 ॐ ह्रीं श्री विदांवराय नमः       | 22 ॐ ह्रीं श्री वेदवेद्याय नमः         |
| 23 ॐ ह्रीं श्री स्वसंवेद्याय नमः    | 24 ॐ ह्रीं श्री विवेदाय नमः            |
| 25 ॐ ह्रीं श्री वदताम्बराय नमः      | 26 ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधनाय नमः        |
| 27 ॐ ह्रीं श्री व्यक्ताय नमः        | 28 ॐ ह्रीं श्री व्यक्तवाचे नमः         |
| 29 ॐ ह्रीं श्री व्यक्तशासनाय नमः    | 30 ॐ ह्रीं श्री युगादिकृते नमः         |
| 31 ॐ ह्रीं श्री युगाधराय नमः        | 32 ॐ ह्रीं श्री युगादये नमः            |
| 33 ॐ ह्रीं श्री जगदादिजाय नमः       | 34 ॐ ह्रीं श्री अतीन्द्राय नमः         |
| 35 ॐ ह्रीं श्री अतीन्द्रियाय नमः    | 36 ॐ ह्रीं श्री धीन्द्राय नमः          |
| 37 ॐ ह्रीं श्री महेन्द्राय नमः      | 38 ॐ ह्रीं श्री अतीन्द्रियार्थदृशे नमः |
| 39 ॐ ह्रीं श्री अनिन्द्रियाय नमः    | 40 ॐ ह्रीं श्री अहमिन्द्रार्च्याय नमः  |
| 41 ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रमहिताय नमः  | 42 ॐ ह्रीं श्री महते नमः               |
| 43 ॐ ह्रीं श्री उद्भाव नमः          | 44 ॐ ह्रीं श्री कारणाय नमः             |
| 45 ॐ ह्रीं श्री कर्त्रे नमः         | 46 ॐ ह्रीं श्री पारगाय नमः             |
| 47 ॐ ह्रीं श्री भवतारकाय नमः        | 48 ॐ ह्रीं श्री अग्राह्याय नमः         |
| 49 ॐ ह्रीं श्री गहनाय नमः           | 50 ॐ ह्रीं श्री गुह्याय नमः            |
| 51 ॐ ह्रीं श्री परार्ध्याय नमः      | 52 ॐ ह्रीं श्री परमेश्वराय नमः         |
| 53 ॐ ह्रीं श्री अनन्तर्द्वये नमः    | 54 ॐ ह्रीं श्री अमेयर्द्वये नमः        |
| 55 ॐ ह्रीं श्री अचिन्त्यर्द्वये नमः | 56 ॐ ह्रीं श्री समग्रधिगे नमः          |
| 57 ॐ ह्रीं श्री प्राग्रयाय नमः      | 58 ॐ ह्रीं श्री प्राग्रहराय नमः        |
| 59 ॐ ह्रीं श्री अभ्यग्राय नमः       | 60 ॐ ह्रीं श्री प्रत्यग्राय नमः        |
| 61 ॐ ह्रीं श्री अग्रयाय नमः         | 62 ॐ ह्रीं श्री अग्रिमाय नमः           |
| 63 ॐ ह्रीं श्री अग्रजाय नमः         | 64 ॐ ह्रीं श्री महातपसे नमः            |
| 65 ॐ ह्रीं श्री महातेजसे नमः        | 66 ॐ ह्रीं श्री महोदकाय नमः            |
| 67 ॐ ह्रीं श्री महोदयाय नमः         | 68 ॐ ह्रीं श्री महायशसे नमः            |
| 69 ॐ ह्रीं श्री महाधाम्ने नमः       | 70 ॐ ह्रीं श्री महासत्त्वाय नमः        |
| 71 ॐ ह्रीं श्री महाधृतये नमः        | 72 ॐ ह्रीं श्री महाधैर्याय नमः         |
| 73 ॐ ह्रीं श्री महावीर्याय नमः      | 74 ॐ ह्रीं श्री महासंपदे नमः           |
| 75 ॐ ह्रीं श्री महाबलाय नमः         | 76 ॐ ह्रीं श्री महाशक्तये नमः          |
| 77 ॐ ह्रीं श्री महाज्योतिषे नमः     | 78 ॐ ह्रीं श्री महाभूतये नमः           |
| 79 ॐ ह्रीं श्री महाद्युतये नमः      | 80 ॐ ह्रीं श्री महामतये नमः            |
| 81 ॐ ह्रीं श्री महानीतये नमः        | 82 ॐ ह्रीं श्री महाक्षान्तये नमः       |



- |  |                                 |
|--|---------------------------------|
| 83 ॐ ह्रीं श्री महादयाय नमः                | 84 ॐ ह्रीं श्री महाप्रज्ञाय नमः |
| 85 ॐ ह्रीं श्री महाभागाय नमः               | 86 ॐ ह्रीं श्री महानंदाय नमः    |
| 87 ॐ ह्रीं श्री महाकवये नमः                | 88 ॐ ह्रीं श्री महामहाय नमः     |
| 89 ॐ ह्रीं श्री महाकीर्तये नमः             | 90 ॐ ह्रीं श्री महाकान्तये नमः  |
| 91 ॐ ह्रीं श्री महावपुषे नमः               | 92 ॐ ह्रीं श्री महादानाय नमः    |
| 93 ॐ ह्रीं श्री महाज्ञानाय नमः             | 94 ॐ ह्रीं श्री महायोगाय नमः    |
| 95 ॐ ह्रीं श्री महागुणाय नमः               | 96 ॐ ह्रीं श्री महामहपतये नमः   |
| 97 ॐ ह्रीं श्री प्राप्तमहाकल्याणपंचकाय नमः | 98 ॐ ह्रीं श्री महाप्रभवे नमः   |
| 99 ॐ ह्रीं श्री महाप्रातिहार्याधीशाय नमः   | 100 ॐ ह्रीं श्री महेश्वराय नमः  |

दोहा- श्री वृक्ष लक्षणादि शत, नित्य रहे यह नाम ।

अष्ट द्रव्य से पूजकर, करते विशद प्रणाम ॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

### अथ महामुन्यादि शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

- |  |                                       |
|--|---------------------------------------|
| 1 ॐ ह्रीं श्री महामुनये नमः            | 2 ॐ ह्रीं श्री महामौनिने नमः          |
| 3 ॐ ह्रीं श्री महाध्यानने नमः          | 4 ॐ ह्रीं श्री महादमाय नमः            |
| 5 ॐ ह्रीं श्री महाक्षमाय नमः           | 6 ॐ ह्रीं श्री महाशीलाय नमः           |
| 7 ॐ ह्रीं श्री महायज्ञाय नमः           | 8 ॐ ह्रीं श्री महामखाय नमः            |
| 9 ॐ ह्रीं श्री महाव्रतपतये नमः         | 10 ॐ ह्रीं श्री मह्याय नमः            |
| 11 ॐ ह्रीं श्री महाकांतिधराय नमः       | 12 ॐ ह्रीं श्री अधिपाय नमः            |
| 13 ॐ ह्रीं श्री महामैत्रीमयाय नमः      | 14 ॐ ह्रीं श्री अमेयाय नमः            |
| 15 ॐ ह्रीं श्री महोपायाय नमः           | 16 ॐ ह्रीं श्री महोमयाय नमः           |
| 17 ॐ ह्रीं श्री महाकारुणिकाय नमः       | 18 ॐ ह्रीं श्री मंत्रे नमः            |
| 19 ॐ ह्रीं श्री महामंत्राय नमः         | 20 ॐ ह्रीं श्री महायतये नमः           |
| 21 ॐ ह्रीं श्री महानादाय नमः           | 22 ॐ ह्रीं श्री महाघोषाय नमः          |
| 23 ॐ ह्रीं श्री महेज्याय नमः           | 24 ॐ ह्रीं श्री महसांपतये नमः         |
| 25 ॐ ह्रीं श्री महाध्वरधराय नमः        | 26 ॐ ह्रीं श्री धुर्याय नमः           |
| 27 ॐ ह्रीं श्री महौदार्याय नमः         | 28 ॐ ह्रीं श्री महिष्ठवाचे नमः        |
| 29 ॐ ह्रीं श्री महात्मने नमः           | 30 ॐ ह्रीं श्री महसांधाम्ने नमः       |
| 31 ॐ ह्रीं श्री महर्षये नमः            | 32 ॐ ह्रीं श्री महितोदयाय नमः         |
| 33 ॐ ह्रीं श्री महाक्लेशांकुशाय नमः    | 34 ॐ ह्रीं श्री शूराय नमः             |
| 35 ॐ ह्रीं श्री महाभूतपतये नमः         | 36 ॐ ह्रीं श्री गुर्वे नमः            |
| 37 ॐ ह्रीं श्री महापराक्रमाय नमः       | 38 ॐ ह्रीं श्री अनन्ताय नमः           |
| 39 ॐ ह्रीं श्री महाक्रोधरिपवे नमः      | 40 ॐ ह्रीं श्री वशिने नमः             |
| 41 ॐ ह्रीं श्री महाभवाब्धिसंतारिणे नमः | 42 ॐ ह्रीं श्री महामोहाद्रिसूदनाय नमः |
| 43 ॐ ह्रीं श्री महागुणाकराय नमः        | 44 ॐ ह्रीं श्री क्षान्ताय नमः         |

- |                                   |                                    |
|-----------------------------------|------------------------------------|
| 45 ॐ ह्रीं श्री महायोगीश्वराय नमः | 46 ॐ ह्रीं श्री शमिने नमः          |
| 47 ॐ ह्रीं श्री महाध्यानपतये नमः  | 48 ॐ ह्रीं श्री ध्यातमहाधर्माय नमः |
| 49 ॐ ह्रीं श्री महाव्रताय नमः     | 50 ॐ ह्रीं श्री महाकर्मारिणे नमः   |
| 51 ॐ ह्रीं श्री आत्मज्ञाय नमः     | 52 ॐ ह्रीं श्री महादेवाय नमः       |
| 53 ॐ ह्रीं श्री महेशिखे नमः       | 54 ॐ ह्रीं श्री सर्वक्लेशापहाय नमः |
| 55 ॐ ह्रीं श्री साधवे नमः         | 56 ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषहराय नमः    |
| 57 ॐ ह्रीं श्री हराय नमः          | 58 ॐ ह्रीं श्री असंख्येयाय नमः     |
| 59 ॐ ह्रीं श्री अप्रमेयात्मने नमः | 60 ॐ ह्रीं श्री शमात्मने नमः       |
| 61 ॐ ह्रीं श्री प्रशमाकराय नमः    | 62 ॐ ह्रीं श्री सर्वयोगीश्वराय नमः |
| 63 ॐ ह्रीं श्री अचिन्त्याय नमः    | 64 ॐ ह्रीं श्री श्रुतात्मने नमः    |
| 65 ॐ ह्रीं श्री विष्टरश्रवसे नमः  | 66 ॐ ह्रीं श्री दान्तात्मने नमः    |
| 67 ॐ ह्रीं श्री दमतीर्थेशाय नमः   | 68 ॐ ह्रीं श्री योगात्मने नमः      |
| 69 ॐ ह्रीं श्री ज्ञानसर्वगाय नमः  | 70 ॐ ह्रीं श्री प्रधानाय नमः       |
| 71 ॐ ह्रीं श्री आत्मने नमः        | 72 ॐ ह्रीं श्री प्रकृतये नमः       |
| 73 ॐ ह्रीं श्री परमाय नमः         | 74 ॐ ह्रीं श्री परमोदयाय नमः       |
| 75 ॐ ह्रीं श्री प्रक्षीणबंधाय नमः | 76 ॐ ह्रीं श्री कामारये नमः        |
| 77 ॐ ह्रीं श्री क्षेमकृते नमः     | 78 ॐ ह्रीं श्री क्षेमशासनाय नमः    |
| 79 ॐ ह्रीं श्री प्रणवाय नमः       | 80 ॐ ह्रीं श्री प्रणयाय नमः        |
| 81 ॐ ह्रीं श्री प्राणाय नमः       | 82 ॐ ह्रीं श्री प्राणदाय नमः       |
| 83 ॐ ह्रीं श्री प्रणतेश्वराय नमः  | 84 ॐ ह्रीं श्री प्रमाणाय नमः       |
| 85 ॐ ह्रीं श्री प्रणिधये नमः      | 86 ॐ ह्रीं श्री दक्षाय नमः         |
| 87 ॐ ह्रीं श्री दक्षिणाय नमः      | 88 ॐ ह्रीं श्री अध्वर्यवे नमः      |
| 89 ॐ ह्रीं श्री अध्वराय नमः       | 90 ॐ ह्रीं श्री आनन्दाय नमः        |
| 91 ॐ ह्रीं श्री नन्दनाय नमः       | 92 ॐ ह्रीं श्री नन्दाय नमः         |
| 93 ॐ ह्रीं श्री वंदाय नमः         | 94 ॐ ह्रीं श्री अनिद्याय नमः       |
| 95 ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनाय नमः    | 96 ॐ ह्रीं श्री कामघ्ने नमः        |
| 97 ॐ ह्रीं श्री कामदाय नमः        | 98 ॐ ह्रीं श्री काम्याय नमः        |
| 99 ॐ ह्रीं श्री कामधेनवे नमः      | 100 ॐ ह्रीं श्री अरिंजयाय नमः      |

दोहा- महामुन्यादि शत शुभम्, आदि जिनके नाम ।

अष्ट द्रव्य से पूजकर, करते विशद प्रणाम ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री महामुन्यादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

### अथ असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

- |  |                               |
|--|-------------------------------|
| 1 ॐ ह्रीं श्री असंस्कृतसुसंस्काराय नमः | 2 ॐ ह्रीं श्री अप्राकृताय नमः |
| 3 ॐ ह्रीं श्री वैकृतांतकृते नमः        | 4 ॐ ह्रीं श्री अंतकृते नमः    |

- |                                     |                                      |
|-------------------------------------|--------------------------------------|
| 5 ॐ ह्रीं श्री कांतगवे नमः          | 6 ॐ ह्रीं श्री कांताय नमः            |
| 7 ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणये नमः       | 8 ॐ ह्रीं श्री अभीष्टदाय नमः         |
| 9 ॐ ह्रीं श्री अजिताय नमः           | 10 ॐ ह्रीं श्री जितकामारये नमः       |
| 11 ॐ ह्रीं श्री अमिताय नमः          | 12 ॐ ह्रीं श्री अमितशासनाय नमः       |
| 13 ॐ ह्रीं श्री जितक्रोधाय नमः      | 14 ॐ ह्रीं श्री जितामित्राय नमः      |
| 15 ॐ ह्रीं श्री जितक्लेशाय नमः      | 16 ॐ ह्रीं श्री जितांतकाय नमः        |
| 17 ॐ ह्रीं श्री जिनैन्द्राय नमः     | 18 ॐ ह्रीं श्री परमानंदाय नमः        |
| 19 ॐ ह्रीं श्री मुनीन्द्राय नमः     | 20 ॐ ह्रीं श्री दुंदुभिस्वनाय नमः    |
| 21 ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रवंद्याय नमः | 22 ॐ ह्रीं श्री योगीन्द्राय नमः      |
| 23 ॐ ह्रीं श्री यतीन्द्राय नमः      | 24 ॐ ह्रीं श्री नाभिनंदनाय नमः       |
| 25 ॐ ह्रीं श्री नाभेयाय नमः         | 26 ॐ ह्रीं श्री नाभिजा नमः           |
| 27 ॐ ह्रीं श्री अजाताय नमः          | 28 ॐ ह्रीं श्री सुव्रताय नमः         |
| 29 ॐ ह्रीं श्री मनवे नमः            | 30 ॐ ह्रीं श्री उत्तमाय नमः          |
| 31 ॐ ह्रीं श्री अभेद्याय नमः        | 32 ॐ ह्रीं श्री अनत्ययाय नमः         |
| 33 ॐ ह्रीं श्री अनाश्वते नमः        | 34 ॐ ह्रीं श्री अधिकाय नमः           |
| 35 ॐ ह्रीं श्री अधिगुरवे नमः        | 36 ॐ ह्रीं श्री सुगिरे नमः           |
| 37 ॐ ह्रीं श्री सुमेधसे नमः         | 38 ॐ ह्रीं श्री विक्रमिणे नमः        |
| 39 ॐ ह्रीं श्री स्वामिने नमः        | 40 ॐ ह्रीं श्री दुराधर्षाय नमः       |
| 41 ॐ ह्रीं श्री निरुसुकाय नमः       | 42 ॐ ह्रीं श्री विशिष्टाय नमः        |
| 43 ॐ ह्रीं श्री शिष्टभुजे नमः       | 44 ॐ ह्रीं श्री शिष्टाय नमः          |
| 45 ॐ ह्रीं श्री प्रत्ययाय नमः       | 46 ॐ ह्रीं श्री कामनाय नमः           |
| 47 ॐ ह्रीं श्री अनघाय नमः           | 48 ॐ ह्रीं श्री क्षेमिणे नमः         |
| 49 ॐ ह्रीं श्री क्षेमंकराय नमः      | 50 ॐ ह्रीं श्री अक्षयाय नमः          |
| 51 ॐ ह्रीं श्री क्षेमधर्मपतये नमः   | 52 ॐ ह्रीं श्री क्षमिने नमः          |
| 53 ॐ ह्रीं श्री अग्राह्याय नमः      | 54 ॐ ह्रीं श्री ज्ञाननिग्राह्याय नमः |
| 55 ॐ ह्रीं श्री ज्ञानगम्याय नमः     | 56 ॐ ह्रीं श्री निरुत्तराय नमः       |
| 57 ॐ ह्रीं श्री सुकृतिने नमः        | 58 ॐ ह्रीं श्री धातवे नमः            |
| 59 ॐ ह्रीं श्री इज्याह्राय नमः      | 60 ॐ ह्रीं श्री सुनयाय नमः           |
| 61 ॐ ह्रीं श्री श्रीसुनिवासाय नमः   | 62 ॐ ह्रीं श्री चतुराननाय नमः        |
| 63 ॐ ह्रीं श्री चतुर्वक्त्राय नमः   | 64 ॐ ह्रीं श्री चतुरास्याय नमः       |
| 65 ॐ ह्रीं श्री चतुर्मुखाय नमः      | 66 ॐ ह्रीं श्री सत्यात्मने नमः       |
| 67 ॐ ह्रीं श्री सत्यविज्ञानाय नमः   | 68 ॐ ह्रीं श्री सत्यवाचे नमः         |
| 69 ॐ ह्रीं श्री सत्यशासनाय नमः      | 70 ॐ ह्रीं श्री सत्याशिषे नमः        |
| 71 ॐ ह्रीं श्री सत्यसंधानाय नमः     | 72 ॐ ह्रीं श्री सत्याय नमः           |
| 73 ॐ ह्रीं श्री सत्यपरायणाय नमः     | 74 ॐ ह्रीं श्री स्थेयसे नमः          |

- |                                     |                                |
|-------------------------------------|--------------------------------|
| 75 ॐ ह्रीं श्री स्थवीयसे नमः        | 76 ॐ ह्रीं श्री नेदीयसे नमः    |
| 77 ॐ ह्रीं श्री दवीयसे नमः          | 78 ॐ ह्रीं श्री दूरदर्शनाय नमः |
| 79 ॐ ह्रीं श्री अणोरणीयसे नमः       | 80 ॐ ह्रीं श्री अनणवे नमः      |
| 81 ॐ ह्रीं श्री गरीयसमाद्यगुरवे नमः | 82 ॐ ह्रीं श्री सदायोगाय नमः   |
| 83 ॐ ह्रीं श्री सदाभोगाय नमः        | 84 ॐ ह्रीं श्री सदातृप्ताय नमः |
| 85 ॐ ह्रीं श्री सदाशिवाय नमः        | 86 ॐ ह्रीं श्री सदागतये नमः    |
| 87 ॐ ह्रीं श्री सदासौख्याय नमः      | 88 ॐ ह्रीं श्री सदाविद्याय नमः |
| 89 ॐ ह्रीं श्री सदोदयाय नमः         | 90 ॐ ह्रीं श्री सुघोषाय नमः    |
| 91 ॐ ह्रीं श्री सुमुखाय नमः         | 92 ॐ ह्रीं श्री सौम्याय नमः    |
| 93 ॐ ह्रीं श्री सुखदाय नमः          | 94 ॐ ह्रीं श्री सुहिताय नमः    |
| 95 ॐ ह्रीं श्री सुहृदे नमः          | 96 ॐ ह्रीं श्री सुगुप्ताय नमः  |
| 97 ॐ ह्रीं श्री गुप्तिभृते नमः      | 98 ॐ ह्रीं श्री गोप्त्रे नमः   |
| 99 ॐ ह्रीं श्री लोकाध्यक्षाय नमः    | 100 ॐ ह्रीं श्री दमेश्वराय नमः |

दोहा- असंस्कृत से आदि कर, आदि जिन के नाम ।

अष्ट द्रव्य से पूजकर, उनको करूँ प्रणाम ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनामेभ्यः पूर्णाध्वं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ बृहद् बृहस्पत्यादि शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

- |                                      |                                  |
|--------------------------------------|----------------------------------|
| 1 ॐ ह्रीं श्री बृहद्बृहस्पतये नमः    | 2 ॐ ह्रीं श्री वामिने नमः        |
| 3 ॐ ह्रीं श्री वाचस्पतये नमः         | 4 ॐ ह्रीं श्री उदारधिये नमः      |
| 5 ॐ ह्रीं श्री मनीषिणे नमः           | 6 ॐ ह्रीं श्री धिषणाय नमः        |
| 7 ॐ ह्रीं श्री धीमते नमः             | 8 ॐ ह्रीं श्री शेमुषीशाय नमः     |
| 9 ॐ ह्रीं श्री गिरांपतये नमः         | 10 ॐ ह्रीं श्री नैकरूपाय नमः     |
| 11 ॐ ह्रीं श्री नयोतुंगाय नमः        | 12 ॐ ह्रीं श्री नैकात्मने नमः    |
| 13 ॐ ह्रीं श्री नैकधर्मकृते नमः      | 14 ॐ ह्रीं श्री अविज्ञेयाय नमः   |
| 15 ॐ ह्रीं श्री अप्रतर्क्यात्मने नमः | 16 ॐ ह्रीं श्री कृतज्ञाय नमः     |
| 17 ॐ ह्रीं श्री कृतलक्षणाय नमः       | 18 ॐ ह्रीं श्री ज्ञानगर्भाय नमः  |
| 19 ॐ ह्रीं श्री दयागर्भाय नमः        | 20 ॐ ह्रीं श्री रत्नगर्भाय नमः   |
| 21 ॐ ह्रीं श्री प्रभास्वराय नमः      | 22 ॐ ह्रीं श्री पद्मगर्भाय नमः   |
| 23 ॐ ह्रीं श्री जगद्गर्भाय नमः       | 24 ॐ ह्रीं श्री हेमगर्भाय नमः    |
| 25 ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनाय नमः        | 26 ॐ ह्रीं श्री लक्ष्मीवते नमः   |
| 27 ॐ ह्रीं श्री त्रिदशाध्यक्षाय नमः  | 28 ॐ ह्रीं श्री दृढीयसे नमः      |
| 29 ॐ ह्रीं श्री इनाय नमः             | 30 ॐ ह्रीं श्री ईशित्रे नमः      |
| 31 ॐ ह्रीं श्री मनोहराय नमः          | 32 ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञांगाय नमः  |
| 33 ॐ ह्रीं श्री धीराय नमः            | 34 ॐ ह्रीं श्री गम्भीरशासनाय नमः |

- 35 ॐ ह्रीं श्री धर्मयूपाय नमः  
 37 ॐ ह्रीं श्री धर्मनेमये नमः  
 39 ॐ ह्रीं श्री धर्मचक्रायुधाय नमः  
 41 ॐ ह्रीं श्री कर्मघ्ने नमः  
 43 ॐ ह्रीं श्री अमोघवाचे नमः  
 45 ॐ ह्रीं श्री निर्मलाय नमः  
 47 ॐ ह्रीं श्री सुरूपाय नमः  
 49 ॐ ह्रीं श्री त्यागिने नमः  
 51 ॐ ह्रीं श्री समाहिताय नमः  
 53 ॐ ह्रीं श्री स्वस्थाय नमः  
 55 ॐ ह्रीं श्री नीरजस्काय नमः  
 57 ॐ ह्रीं श्री अलेपाय नमः  
 59 ॐ ह्रीं श्री वीतरागाय नमः  
 61 ॐ ह्रीं श्री वश्येन्द्रियाय नमः  
 63 ॐ ह्रीं श्री निःसपत्नाय नमः  
 65 ॐ ह्रीं श्री प्रशांताय नमः  
 67 ॐ ह्रीं श्री मंगलाय नमः  
 69 ॐ ह्रीं श्री अनघाय नमः  
 71 ॐ ह्रीं श्री उपमाभूताय नमः  
 73 ॐ ह्रीं श्री दैवाय नमः  
 75 ॐ ह्रीं श्री अमूर्ताय नमः  
 77 ॐ ह्रीं श्री एकाय नमः  
 79 ॐ ह्रीं श्री अध्यात्मगम्याय नमः  
 81 ॐ ह्रीं श्री योगविदे नमः  
 83 ॐ ह्रीं श्री सर्वत्रगाय नमः  
 85 ॐ ह्रीं श्री त्रिकालविषयार्थदृशे नमः  
 87 ॐ ह्रीं श्री शंवदाय नमः  
 89 ॐ ह्रीं श्री दमिने नमः  
 91 ॐ ह्रीं श्री अधिपाय नमः  
 93 ॐ ह्रीं श्री परमात्मज्ञाय नमः  
 95 ॐ ह्रीं श्री त्रिजगद्बल्लभाय नमः  
 97 ॐ ह्रीं श्री त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः  
 99 ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः
- 36 ॐ ह्रीं श्री दयायागाय नमः  
 38 ॐ ह्रीं श्री मुनीश्वराय नमः  
 40 ॐ ह्रीं श्री देवाय नमः  
 42 ॐ ह्रीं श्री धर्मघोषणाय नमः  
 44 ॐ ह्रीं श्री अमोघाज्ञाय नमः  
 46 ॐ ह्रीं श्री अमोघशासनाय नमः  
 48 ॐ ह्रीं श्री सुभगाय नमः  
 50 ॐ ह्रीं श्री ज्ञात्रे नमः  
 52 ॐ ह्रीं श्री सुस्थिताय नमः  
 54 ॐ ह्रीं श्री स्वास्थ्यभाजे नमः  
 56 ॐ ह्रीं श्री निरुद्धाय नमः  
 58 ॐ ह्रीं श्री निष्कलंकात्मने नमः  
 60 ॐ ह्रीं श्री गतस्पृहाय नमः  
 62 ॐ ह्रीं श्री विमुक्तात्मने नमः  
 64 ॐ ह्रीं श्री जितेन्द्रियाय नमः  
 66 ॐ ह्रीं श्री अनन्तधामर्षये नमः  
 68 ॐ ह्रीं श्री मलघ्ने नमः  
 70 ॐ ह्रीं श्री अनीदृशे नमः  
 72 ॐ ह्रीं श्री दिष्टये नमः  
 74 ॐ ह्रीं श्री अगोचराय नमः  
 76 ॐ ह्रीं श्री मूर्तिमते नमः  
 78 ॐ ह्रीं श्री नैकाय नमः  
 80 ॐ ह्रीं श्री अगम्यात्मने नमः  
 82 ॐ ह्रीं श्री योगिवंदिताय नमः  
 84 ॐ ह्रीं श्री सदाभाविने नमः  
 86 ॐ ह्रीं श्री शंकराय नमः  
 88 ॐ ह्रीं श्री दांताय नमः  
 90 ॐ ह्रीं श्री क्षान्तिपरायणाय नमः  
 92 ॐ ह्रीं श्री परमानंदाय नमः  
 94 ॐ ह्रीं श्री परात्पराय नमः  
 96 ॐ ह्रीं श्री अभ्यर्च्याय नमः  
 98 ॐ ह्रीं श्री त्रिजगत्पतिपूज्यांग्रये नमः

दोहा- बृहदादि को आदिकर, क्रमशः यह सौ नाम।

अष्ट द्रव्य से पूजकर, करते विशद प्रणाम॥८॥

ॐ ह्रीं श्री बृहद्वृहस्पत्यादिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

### अथ त्रिकालदर्शितादि शतनामभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

- 1 ॐ ह्रीं श्री त्रिकालदर्शिने नमः  
 3 ॐ ह्रीं श्री लोकधात्रे नमः  
 5 ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकातिगाय नमः  
 7 ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकैकसारथये नमः  
 9 ॐ ह्रीं श्री पुरुषाय नमः  
 11 ॐ ह्रीं श्री कृतपूर्वागविस्तराय नमः  
 13 ॐ ह्रीं श्री पुराणाद्याय नमः  
 15 ॐ ह्रीं श्री अधिदेवतायै नमः  
 17 ॐ ह्रीं श्री युगज्येष्ठाय नमः  
 19 ॐ ह्रीं श्री कल्याणवर्णाय नमः  
 21 ॐ ह्रीं श्री कल्याय नमः  
 23 ॐ ह्रीं श्री कल्याणप्रकृतये नमः  
 25 ॐ ह्रीं श्री विकल्मषाय नमः  
 27 ॐ ह्रीं श्री कलातीताय नमः  
 29 ॐ ह्रीं श्री कलाधराय नमः  
 31 ॐ ह्रीं श्री जगन्नाथाय नमः  
 33 ॐ ह्रीं श्री जगतद्विभवे नमः  
 35 ॐ ह्रीं श्री लोकज्ञाय नमः  
 37 ॐ ह्रीं श्री जगदग्रजाय नमः  
 39 ॐ ह्रीं श्री गोप्याय नमः  
 41 ॐ ह्रीं श्री गूढगोचराय नमः  
 43 ॐ ह्रीं श्री प्रकाशात्मने नमः  
 45 ॐ ह्रीं श्री आदित्यवर्णाय नमः  
 47 ॐ ह्रीं श्री सुप्रभाय नमः  
 49 ॐ ह्रीं श्री सुवर्णवर्णाय नमः  
 51 ॐ ह्रीं श्री सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः  
 53 ॐ ह्रीं श्री तुंगाय नमः  
 55 ॐ ह्रीं श्री अनलप्रभाय नमः  
 57 ॐ ह्रीं श्री हेमाभाय नमः  
 59 ॐ ह्रीं श्री निष्टपतनकच्छायाय नमः  
 61 ॐ ह्रीं श्री हिरण्यवर्णाय नमः  
 63 ॐ ह्रीं श्री शांतकुंभनिभप्रभाय नमः
- 2 ॐ ह्रीं श्री लोकेशाय नमः  
 4 ॐ ह्रीं श्री दृढव्रताय नमः  
 6 ॐ ह्रीं श्री पूज्याय नमः  
 8 ॐ ह्रीं श्री पुराणाय नमः  
 10 ॐ ह्रीं श्री पूर्वाय नमः  
 12 ॐ ह्रीं श्री आदिदेवाय नमः  
 14 ॐ ह्रीं श्री पुरुदेवाय नमः  
 16 ॐ ह्रीं श्री युगमुख्याय नमः  
 18 ॐ ह्रीं श्री युगादिस्थितिदेशकाय नमः  
 20 ॐ ह्रीं श्री कल्याणाय नमः  
 22 ॐ ह्रीं श्री कल्याणप्रकृतये नमः  
 24 ॐ ह्रीं श्री दीप्रकल्याणात्मने नमः  
 26 ॐ ह्रीं श्री विकलंकाय नमः  
 28 ॐ ह्रीं श्री कलिलघ्नाय नमः  
 30 ॐ ह्रीं श्री देवदेवाय नमः  
 32 ॐ ह्रीं श्री जगद्वंधवे नमः  
 34 ॐ ह्रीं श्री जगद्विषे नमः  
 36 ॐ ह्रीं श्री सर्वगाय नमः  
 38 ॐ ह्रीं श्री चराचरगुणे नमः  
 40 ॐ ह्रीं श्री गूढात्मने नमः  
 42 ॐ ह्रीं श्री सद्योजाताय नमः  
 44 ॐ ह्रीं श्री ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नमः  
 46 ॐ ह्रीं श्री भर्माभाय नमः  
 48 ॐ ह्रीं श्री कनकप्रभाय नमः  
 50 ॐ ह्रीं श्री रुक्माभाय नमः  
 52 ॐ ह्रीं श्री तपनीयनिभाय नमः  
 54 ॐ ह्रीं श्री बालार्काभाय नमः  
 56 ॐ ह्रीं श्री संध्याभ्रबभ्रवे नमः  
 58 ॐ ह्रीं श्री तप्तचामीकरप्रभाय नमः  
 60 ॐ ह्रीं श्री कनत्कांचनसन्निभाय नमः  
 62 ॐ ह्रीं श्री स्वर्णाभाय नमः  
 64 ॐ ह्रीं श्री ह्युम्नाभास नमः

- 65 ॐ ह्रीं श्री जातरूपाभाय नमः  
 67 ॐ ह्रीं श्री सुधौतकलधौतश्रिये नमः  
 69 ॐ ह्रीं श्री हाटकद्युतये नमः  
 71 ॐ ह्रीं श्री पुष्टिदाय नमः  
 73 ॐ ह्रीं श्री स्पष्टाय नमः  
 75 ॐ ह्रीं श्री क्षमाय नमः  
 77 ॐ ह्रीं श्री अप्रतिघाय नमः  
 79 ॐ ह्रीं श्री प्रशान्ते नमः  
 81 ॐ ह्रीं श्री स्वधुवे नमः  
 83 ॐ ह्रीं श्री मुनिज्येष्ठाय नमः  
 85 ॐ ह्रीं श्री शान्तिदाय नमः  
 87 ॐ ह्रीं श्री शान्तये नमः  
 89 ॐ ह्रीं श्री कान्तिमते नमः  
 91 ॐ ह्रीं श्री अधिष्ठानाय नमः  
 93 ॐ ह्रीं श्री प्रतिष्ठिताय नमः  
 95 ॐ ह्रीं श्री स्थावराय नमः  
 97 ॐ ह्रीं श्री प्रथीयसे नमः  
 99 ॐ ह्रीं श्री पृथवे नमः

दोहा- त्रिकालदर्शि को मुख्यकर, शत् नामों के नाथ।

आदि जिनेश्वर पूजता, अष्ट द्रव्य के साथ ॥१९॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

### अथ दिवासादि अष्टोत्तरशतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

- 1 ॐ ह्रीं श्री दिवासासे नमः  
 3 ॐ ह्रीं श्री निर्ग्रथेशाय नमः  
 5 ॐ ह्रीं श्री निष्किंचनाय नमः  
 7 ॐ ह्रीं श्री ज्ञानचक्षुषे नमः  
 9 ॐ ह्रीं श्री तेजोराशये नमः  
 11 ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाब्धये नमः  
 13 ॐ ह्रीं श्री तेजोमयाय नमः  
 15 ॐ ह्रीं श्री ज्योतिर्मूर्तये नमः  
 17 ॐ ह्रीं श्री जगच्चूडामणये नमः  
 19 ॐ ह्रीं श्री शंवते नमः  
 21 ॐ ह्रीं श्री कलिघ्नाय नमः  
 23 ॐ ह्रीं श्री लोकालोकप्रकाशकाय नमः
- 2 ॐ ह्रीं श्री वातरशनाय नमः  
 4 ॐ ह्रीं श्री दिगम्बराय नमः  
 6 ॐ ह्रीं श्री निराशंसाय नमः  
 8 ॐ ह्रीं श्री अमोमुहाय नमः  
 10 ॐ ह्रीं श्री अनंतौजसे नमः  
 12 ॐ ह्रीं श्री शीलसागराय नमः  
 14 ॐ ह्रीं श्री अमितज्योतिषे नमः  
 16 ॐ ह्रीं श्री तमोपहाय नमः  
 18 ॐ ह्रीं श्री दीसाय नमः  
 20 ॐ ह्रीं श्री विघ्नविनायकाय नमः  
 22 ॐ ह्रीं श्री कर्मशत्रुघ्नाय नमः  
 24 ॐ ह्रीं श्री अनिद्रालवे नमः

- 25 ॐ ह्रीं श्री अतंद्रालवे नमः  
 27 ॐ ह्रीं श्री प्रमामयाय नमः  
 29 ॐ ह्रीं श्री जगज्ज्योतिषे नमः  
 31 ॐ ह्रीं श्री प्रजाहिताय नमः  
 33 ॐ ह्रीं श्री बंधमोक्षज्ञाय नमः  
 35 ॐ ह्रीं श्री जितमन्मथाय नमः  
 37 ॐ ह्रीं श्री भव्यपेटकनायकाय नमः  
 39 ॐ ह्रीं श्री स्वधुवे नमः  
 41 ॐ ह्रीं श्री मूलकारणाय नमः  
 43 ॐ ह्रीं श्री वागीश्वराय नमः  
 45 ॐ ह्रीं श्री श्रायसोक्तये नमः  
 47 ॐ ह्रीं श्री प्रवक्त्रे नमः  
 49 ॐ ह्रीं श्री मारजिते नमः  
 51 ॐ ह्रीं श्री सुतनवे नमः  
 53 ॐ ह्रीं श्री सुगताय नमः  
 55 ॐ ह्रीं श्री श्रीशाय नमः  
 57 ॐ ह्रीं श्री वीतभिये नमः  
 59 ॐ ह्रीं श्री उत्सन्नदोषाय नमः  
 61 ॐ ह्रीं श्री निश्चलाय नमः  
 63 ॐ ह्रीं श्री लोकोत्तराय नमः  
 65 ॐ ह्रीं श्री लोकचक्षुषे नमः  
 67 ॐ ह्रीं श्री धीरधिये नमः  
 69 ॐ ह्रीं श्री शुद्धाय नमः  
 71 ॐ ह्रीं श्री प्रज्ञापारमिताय नमः  
 73 ॐ ह्रीं श्री यतये नमः  
 75 ॐ ह्रीं श्री भदंताय नमः  
 77 ॐ ह्रीं श्री भद्राय नमः  
 79 ॐ ह्रीं श्री वरप्रदाय नमः  
 81 ॐ ह्रीं श्री कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये नमः  
 83 ॐ ह्रीं श्री कर्मठाय नमः  
 85 ॐ ह्रीं श्री हेयादेयविचक्षणाय नमः  
 87 ॐ ह्रीं श्री अच्छेद्या नमः  
 89 ॐ ह्रीं श्री त्रिलोचनाय नमः  
 91 ॐ ह्रीं श्री त्र्यंबकाय नमः
- 26 ॐ ह्रीं श्री जागरूकाय नमः  
 28 ॐ ह्रीं श्री लक्ष्मीपतये नमः  
 30 ॐ ह्रीं श्री धर्मराजाय नमः  
 32 ॐ ह्रीं श्री मुमुक्षवे नमः  
 34 ॐ ह्रीं श्री जिताक्षाय नमः  
 36 ॐ ह्रीं श्री प्रशान्तसशैलूषाय नमः  
 38 ॐ ह्रीं श्री मूलकर्त्रे नमः  
 40 ॐ ह्रीं श्री मलघ्नाय नमः  
 42 ॐ ह्रीं श्री आप्ताय नमः  
 44 ॐ ह्रीं श्री श्रेयसे नमः  
 46 ॐ ह्रीं श्री निरुक्तवाचे नमः  
 48 ॐ ह्रीं श्री वचसामीशाय नमः  
 50 ॐ ह्रीं श्री विश्वभावविदे नमः  
 52 ॐ ह्रीं श्री तनुनिर्मुक्तये नमः  
 54 ॐ ह्रीं श्री हतदुर्नयाय नमः  
 56 ॐ ह्रीं श्री श्रीश्रितपादाब्जाय नमः  
 58 ॐ ह्रीं श्री अभयंकराय नमः  
 60 ॐ ह्रीं श्री निर्विघ्नाय नमः  
 62 ॐ ह्रीं श्री लोकवत्सलाय नमः  
 64 ॐ ह्रीं श्री लोकपतये नमः  
 66 ॐ ह्रीं श्री अपारधिये नमः  
 68 ॐ ह्रीं श्री बुद्धसन्मार्गाय नमः  
 70 ॐ ह्रीं श्री सत्यसूनुतवाचे नमः  
 72 ॐ ह्रीं श्री प्राज्ञाय नमः  
 74 ॐ ह्रीं श्री नियमितेन्द्रियाय नमः  
 76 ॐ ह्रीं श्री भद्रकृते नमः  
 78 ॐ ह्रीं श्री कल्पवृक्षाय नमः  
 80 ॐ ह्रीं श्री समुन्मूलिकर्मरये नमः  
 82 ॐ ह्रीं श्री कर्मण्याय नमः  
 84 ॐ ह्रीं श्री प्रांशवे नमः  
 86 ॐ ह्रीं श्री अनन्तशक्तये नमः  
 88 ॐ ह्रीं श्री त्रिपुरारये नमः  
 90 ॐ ह्रीं श्री त्रिनेत्राय नमः  
 92 ॐ ह्रीं श्री त्र्यक्षाय नमः

- |                                       |  |
|---------------------------------------|--|
| 93 ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञानवीक्षणाय नमः | 94 ॐ ह्रीं श्री समंतभद्राय नमः           |
| 95 ॐ ह्रीं श्री 'शांतारये' नमः        | 96 ॐ ह्रीं श्री धर्माचार्याय नमः         |
| 97 ॐ ह्रीं श्री दयानिधये नमः          | 98 ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मदर्शिने नमः       |
| 99 ॐ ह्रीं श्री जितानंगाय नमः         | 100 ॐ ह्रीं श्री कृपालवे नमः             |
| 101 ॐ ह्रीं श्री धर्मदेशकाय नमः       | 102 ॐ ह्रीं श्री शुभ्रयवे नमः            |
| 103 ॐ ह्रीं श्री सुखसाद्भूताय नमः     | 104 ॐ ह्रीं श्री पुण्यराशये नमः          |
| 105 ॐ ह्रीं श्री अनामयाय नमः          | 106 ॐ ह्रीं श्री धर्मपालाय नमः           |
| 107 ॐ ह्रीं श्री जगत्पालाय नमः        | 108 ॐ ह्रीं श्री धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः |

दोहा- दिग्वासादि आठ शत, राजमान यह नाम ।

आदि जिन को पूजते, करके विशद प्रणाम ॥10॥

ॐ ह्रीं श्री दिग्वासादिअष्टोत्तरशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

\* \* \*

## श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

प्रभू पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारूँ ।  
आरती उतारूँ थारी मूरत निहारूँ ।  
प्रभू कर दो भव से पार आज थारी...

अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आखों के तारे ।  
जन्मे है काशीराज- आज थारी..... ॥1॥

बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्नविनाशक मंगलकारी ।  
जैन धर्म के ताज- आज थारी आरती..... ॥2॥

नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया ।  
किया प्रभू उपकार- आज थारी आरती..... ॥3॥

दीन बन्धु हे ! केवलज्ञानी, भव दुःख हर्ता शिव सुख दानी ।  
करो जगत उद्धार- आज थारी..... ॥4॥

“विशद” आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये ।  
जन-जन के सुखकार- आज थारी आरती..... ॥5॥

॥ इति समाप्तम् ॥

## समुच्चय महा-अर्घ्य

पूज रहे अरहंत देव को, और पूजते सिद्ध महान् ।  
आचार्य उपाध्याय पूज्य लोक में, पूज्य रहे साधु गुणवान् ॥  
कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, चैत्य पूजते मंगलकार ।  
सहस्रनाम कल्याणक आगम, दश विध धर्म रहा शुभकार ॥  
सोलहकारण भव्य भावना, अतिशय तीर्थक्षेत्र निर्वाण ।  
बीस विदेह के तीर्थकर जिन, विशद पूज्य चौबिस भगवान् ॥  
ऊर्जयन्त चम्पा पावापुर, श्री सम्मेद शिखर कैलाश ।  
पञ्चमेरु नन्दीश्वर पूजें, रत्नत्रय में करने वास ॥  
मोक्षशास्त्र को पूज रहे हम, बीस विदेहों के जिनराज ।  
पञ्चमेरु नन्दीश्वर पूजे, रत्नत्रय में करने वास ॥

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ ।  
सर्व पूज्य पद पूजते, चरण झुकाकर माथ ॥

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववन्दना त्रिकालपूजा त्रिकालवन्दना करै करावै भावना  
भावै श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो  
नमः प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः । दर्शन-  
विशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः । उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः ।  
सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्र्येभ्यो नमः । जल के विषै, थल के विषै,  
आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक  
मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय  
जिनबिम्बेभ्यो नमः । विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थकरेभ्यो नमः । पाँच भरत, पाँच  
ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः ।  
नन्दीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः । पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन  
चैत्यालयेभ्यो नमः । सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर,  
राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः । जैनबद्री, मूढबद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी,  
पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा,



विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः ।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे .... देश.... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे.... मासानामुत्तमे .... मासे शुभ पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... मुनि आर्थिकानां श्रावक-श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थ अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

## शांतिपाठ

(शम्भू छंद)

चन्द्र समान सुमुख है जिनका, शील सुगुण संयम धारी ।  
लज्जित करते नयन कमल दल, सहस्राष्ट लक्षण धारी ॥  
द्वादश मदन चक्री हो पंचम, सोलहवें तीर्थकर आप ।  
इन्द्र नरेन्द्रादि से पूजित, जग का हरो सकल संताप ॥  
सुरतरु क्षत्र चँवर भामण्डल, पुष्प वृष्टि हो मंगलकार ।  
दिव्य ध्वनि सिंहासन दुन्दुभि, प्रातिहार्य ये अष्ट प्रकार ॥  
शांतिदायक हे शांति जिन !, श्री अरहंत सिद्ध भगवान ।  
संघ चतुर्विध पढ़ें सुनें जो, सबको कर दो शांति प्रदान ॥  
इन्द्रादि कुण्डल किरीट धर, चरण कमल में पूजें आन ।  
श्रेष्ठ वंश के धारी हे जिन !, हमको शांति करो प्रदान ॥  
संपूजक प्रतिपालक यतिवर, राजा प्रजा राष्ट्र शुभ देश ।  
'विशद' शांति दो सबको हे जिन !, यही हमारा है उद्देश ॥  
पूजा सुखी नर नाथ धर्मधर, व्याधी न हो रहे सुकाल ।  
जिन वृष धारे देश सौख्यकर, चौर्य मरी न हो दुष्काल ॥

(चाल छन्द)

जिनघाति कर्म नशाए, कैवल्य ज्ञान प्रगटाए ।  
हे वृषभादि जिन स्वामी, तुम शांति दो जगनामी ॥

हो शास्त्र पठन शुभकारी, सत्संगति हो मनहारी ।  
सब दोष ढाँकते जाएँ, गुण सदाचार के गाएँ ॥  
हम वचन सुहित के बोलें, निज आत्म सरस रस घोलें ।  
जब तक हम मोक्ष न जाएँ, तब तक चरणों में आएँ ॥  
तब पद मम हिय वश जावें, मम हिय तब चरण समावें ।  
हम लीन चरण हो जाएँ, जब तक मुक्ती न पाएँ ॥

दोहा- वर्ण अर्थ पद मात्र में, हुई हो कोई भूल ।  
क्षमा करो हे नाथ सब, भव दुख हो निर्मूल ॥  
चरण शरण पाएँ 'विशद', हे जग बन्धु जिनेश ।  
मरण समाधी कर्म क्षय, पाएँ बोधि विशेष ॥

## विसर्जन पाठ

जाने या अन्जान में, लगा हो कोई दोष ।  
हे जिन ! चरण प्रसाद से, होय पूर्ण निर्दोष ॥  
आह्वानन पूजन विधि, और विसर्जन देव ।  
नहीं जानते अज्ञ हम, कीजे क्षमा सदैव ॥  
क्रिया मंत्र द्रवहीन हम, आये लेकर आस ।  
क्षमादान देकर हमें, रखना अपने पास ॥  
सुर-नर-विद्याधर कोई, पूजा किए विशेष ।  
कृपावन्त होके सभी, जाएँ अपने देश ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आशिका लेने का पद

दोहा- लेकर जिन की आशिका, अपने माथ लगाय ।  
दुख दरिद्र का नाश हो, पाप कर्म कट जाय ॥

(कायोत्सर्ग करें)